

मेवै रा रूख ?

राजस्थानी उपन्यास

मेवै रा रूख ?

अन्नाराम 'सुदामा'

धरतीपत्र
अगाशहृद बीकानेर

© अन्नाराम 'सुवामा'

मोल पन्द्र रिपिया / पेली सस्करण १९७७ / आवरण श्री सन्नू/
प्रकाशक धरती प्रकाशन, गगाशहर, बीकानेर / मुद्रक माहेश्वरी
प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर / आवरण मुद्रण नेशनल आर्ट प्रेस, बीकानेर

MEVE RA RUNKH ? (Novel) ANNA RAM SUDAMA/Price
Rs 15-00

'सुगना, धावरो देखा, चिलम भडका'र बैगो सो बार, सूरज निकलगयो
 हे भलो भातो धाव बीं सू पैला पैला एक पांथ पूरी करणी है आपान, सिनाथ
 (सिवनाथ) आपर काकै रै बेटे भाई नै कयो ।

'दायो ही," चिलम भडकावत बरुण उषळो दियो ।

'रैत सावळ नाखी ऊपर, धावैनी कोई चिणस उड'र "

'नही नहीं धा घोडी ही हुब ?"

"हुवण न तो रंवरण दे सू आगे आग हुगो, धा तो नहीं हुई ही आधी,
 कसिया भू पडी मे ही खडा कियोडा है भलो ।"

"ठा है ।"

कापाँ कसिया भाथा पर रहिया गमछा उधाडा अर कोछा टाग्यां दोनू
 भाई जिनाण पानर टुरग्या, जवान मोरच पर जावता हुवै ज्यू ।

सुगना ताव धाव तो चिलमडी न छोड फोटी करैनी धु वें सू किसी
 बेट भरी नै गैला धा खुराक घोडी ही है आदमी री ।

"चिलम अर चुगली सू लागी भाडी ही है ह जाणू घणी" घोडो रुक'र
 भळे बोलयो 'बाबो जावता जावता धा दे'र गया है लाड में रोज भर भर देवतो
 डोन है ही मोथगयो वण अबै धारै नहीं जची तो धान सू ही छोडी ई ठीकरी
 न काई काढणो है ई काट मे किमो डोन मांजीजै है ई सू ?"

'और तो काई है रे कनेई भू पडती धुखगी तो, धापां नै हीं दोरो है,
 आपणो तो माल गोदाभ ही घो है ।"

भू पडी अ' काई भू पडो डील सू ऊषा घोडा ही है, भाडी जिकी
 भाडी ही भाडी ।"

घात करता करता, डेर सू लासा झलगा, डरी में पूगया घर धापर बीपार में लागया । सिनाथ बरस पतीसेव रो घर सुगनो कोई तीस र ग्राम पास । है यारा यारा, सेतो साग ही कर हेत है भाखो । सिनाथ है तो मैट्रिष ही पण भणाई सू बीरी गुणाई जादा है ।

खेत में धान चीप न सू ल'र भठ प न ताई, पण तिसवारी करतो बो झलसाईज ह्यो घर मांय मांय कोई कोई तुगो भुजसीज'र जमीं र चिप ही । सिनाथ धान नै जिमा हीं उदास घर तिसायो देख्यो आख्या र रस्त एक गैरी उदासी बीरी भाखो चेतना म ऊनरगी । जिमां जिमा कसियो चाल हो बिमा ही बीरो मन । सोच हो 'पांच सात दिन जे की छाटा छिडको महीं हुयो तो तुगो सगळी सीज र रेत साग रळ लेल लागसी घर भापा हाथ झडका र घापण घरे घरे ही नही काई ठा कठ ?' धा तोषता हीं एक भणमावती पीड बीर रू रू में ब्यापगी । पांच सात मण दाणा घूड मे सिडाणा हा, लिडा दिया । फेर सूरज सामों देख्यो, निक्ळता ही किरातकारी । पून ब द घर तिडकी नर तर बधत घोग सी ताती, अघ घडो ही मसां हुई है खोरता पसीन रा रीगा अवार ही चाखू हुया अक पूरो काढमी । भाडग रा भासार है बधती पाड घर उदासी न जाणू एकर की विसराम मिलग्यो । हाथ हाथ कानी देख्यो एक कलिय री लम्बी छायां में रमती चिडकल्या धूम में हाव ही, बीरो डोलता बिश्वास और जमग्यो एकर घर पर एक विरता मूर्तिमत्त हुगी ।

दिस्ती सामन गई ठेठ-पचास पावडा खेत री सीव ताई बोत्यो सुगना, हे ब देख दो तीन डांगरा बड खेत में घणी मर धाग मड्डो ठोकण त्यार रमी, सामतां न मौल पड, दौड देवां' घर बो कसिये ममेत ही दौडघो । कसिय री ऊधी सू घो मत्त ने लिए कठ ही कोई गवतरी र भलो दौडत न बीन मळे सुगीज्यो । कहर पाड्यो ही यो कसियो चलावण लागग्यो । कसियो चलावतो चलावतो धापर मत्त ही बोत्यो डांगरा किसा टिकण द सोरें सास काई दूर में बाडतो और करणी' घर कसियो चाल हो खायो खायो । हाथ इसा सघ्योडा क कसिय री धार न आडी टेढी करतो बो धान र चिपाचिप भर साग ऊग्य निनाण री बड ही छेड करतो धान री भळ रू ही सांडो हुब किसी पोल पडी है । घडी दो डाई एक निनाण कियो हुसी सामन मा घर टाबर भावता दीस्या-भातो ले र । अर घो हाथ और चला र भूपगो कानी गया परा दोनू भाई ।

एारिय पे रोग्घा, तडकरोडो छाछ पांच मान गाठ कादा री भर एक ।

धीरहो मे थोडा लूण मिरच । मा बीली, ' भई महीनं मास म जे रोडती व्यायगा तो छाछ राबही घपाळ खाया, नहीं जितें फोडो ही है । काना न हीं वाळन जोगा नं बाई ठा काई मरी खाई है मस बाई रिपिया कीलो दिया है घन बाणियं ।

‘ बाई रिपिया !’

‘ साई हू नी व ही भळो उडता उडता !’

‘इसो काई नाक भर हो’वा बिना लूण मिरच ही सहो, जाट रा बेटा हा, एकर ता पाणी में अलो’र हो जीम लेंवता ।’

‘ बेटा मिरच किसी सस्ती पड दस बार रिपिया कीलो कीं गुड कीं कचरो फूम भर कीं कमती फूटघां पछ रिपिय में चोखी चटणी एक हीं हुवै । काटा रा च्यार छूतका साग टुकडो गळें मोरो ऊतरसी ।’

बाप ही आयायो लार रो लार काध कसियो उघाडो भर सिर पर मटमलो भर खुस्योडो सो गमखियो बरस साठेक रो घोछोसी दाडती असरो घोछो ही पण लिलाड रो लीका मे जीवण रा अनुभो लम्बो भर निखरघोडो ।

बात की डोकर र काना मे ही पडगी बोल्यो, ‘ भो रिपिया तो अवार सहर में है बादा, भर बाई कीलो हा जेठ में । घन बाणियं, एक लोड पूरो, ले’र माख दियो एक साळ में तीन सू कम काई पडघा हुसो बीर, भो अर बाई में सै काड दिया मरीब भा’मी बाईं तो वायलं भर काई रंगल, एडो टाकडो फोई मा पडे तो बीरो सास निकळनो सोरो एडो निकळनो दोरो ।’

सिनाप जीमतो जीमतो हा बोल्यो रिपियं रा छव सात बट तो ही घन जिस न घाप को आवनी फेर हा उडता ही तोलसी । इसो ही ऋळो राज साम्यो मन दूकानदार बापा रै, सामो हीं का जीवनी ।’

अरे बेटा चोर चोर स मौसियाई भाई राज है कठ मलीदा माय ऊतरघोडा है भोठ घो घाटी सेवा करस्यां अरे सेवा ये थारी भर थार लुगार्क टावरा रो करना भ्हागी क्रिया करम्यो सेवा करण आळी रात ही थारी मावां घान जणती तो घाटो ही ब्यारो, आज ताई अकास र पगोयिया को लगा देंवानी ये जावसी कोई भागण बापडो ई धरती रो उभे घासी बीं दिन । सेवा नं जावण भो, मिलिपा मोस’र मारो नहा तो ही चोखो, थारा गुण मानां—‘मार तो वावण दो टुकडो ।’

डोकर छाया पडी लोटडी उरियां सिरका'र बूक घडाई, दो गुटवा से'र बोल्यो, 'पाणो सदा जिसो ठडो धो लाग्योनी भाज, बिरखा नडी ह हुणी चाईज । मुण ता भा हो राखी है—

'मटकी में पाणो गरम, चिडिया न्हाव घूड ।

ई डा से कीडी चड तो बिरखा भरपूर ॥'

कन बठे, जीमते सिनाव ने, टम री भा बात इसी लागी जाणू बीटी भातमा हीं बाप र कठा सू बोली है । डोकरो कसियो से'र निनाण खोरण टुरग्यो । सिनाव र जी में ही के बाप न सुणाऊ मुगन भाज चिलन छोडगी है' फेर सोचयो सार सू हेलो कुण मारसी दो घडी पछ ही सहो । दोनां भायां डोड एक रोटडी मसां चिगळी हुवसी एक रोटी छाछ में घूर हा का परियां भावती सू एव जीन रो हरडाट सुणीज्यो घर दोनू हा ज्य ही घाळी छोड'र भाग्या भांगळयां ही को चाटीनी, ऊपरला दांत ऊपर घर नीचला नीच भायूणी सीव री खाई में जा र पेट तणा पडग्या दस मिट ताई सिर ही ऊचो को कियोनी । लुगाया दोनू भू पडी में बडगो डण पाछो ही घिरग्यो । बाप डोकरी घर दो पाता बरम दस दसेक रा बार ऊभा भवाज कानी भाक हा । परियां एक मोटर जावती दीसी गांव कानी । रिस्क टळगो जा डोकरो गयो—खाई कन जा र हेलो मारयो, सिनाचिया भावो रे' जद ब निचळया ।

उठ'र डेर भाया रोटडी खाई ईने बीने बाको फाडता फाडता ।

डोकरो बोल्यो 'बाई टम भाई है घर काई धो तोफो चाल्यो है, कीने हीं जीवण देयसी का नहीं । साळा इसा गू गा हुगोडा है के कोई घाठ रो ठा न को साठ रो । रावतिय मेघवाळ न बाड'र बेकार कर दियो म्हार सू पन्दर तिन मोटो है । प्रभु घाळ पोत न—बापडो कुतर री जाद ले र गयो हो सहर, एक मिपा'ड पोटा'र बडा दियो ।'

बीरी तो सगाई हुई ही सार स ?" मुगन कया

'बेईमानां ठगव रो फोडो ही मेर दियो डण हरख कोड सू याव परतो बूक'र रगया बापडा—हाणी न हिरावडो कुण बताव रे भाई ?'

सुणी है बाया रोडी गांव में लुगाई घर मोटघार भाडबड फरनी, डग अर मला ने'र राज री एक जीप भाग ऊभगया, बोल्या मारस्यां घर मरस्यां जे कण ही हाव लया लियो म्हार तो । जीपडी सागो पगा ही दीडगो, मुड'र पाछी भाज ताई को घाईनी ।'

“भीत र छेड फर्त लेवणिया किता है, भर भले राज सू थोडो ही सकीज, हीं सगळी रत उठटथा तो राज न मुश्कल ही है पण भा कद हुवे बैगीसी । धँ तो आपरें किया न भापे ही पूरसी मोडा बंगा जाणा, घडो भरीजण भालो है भवे तो—घनीत री ऊमर घणी लम्बी को हुवनी ।” डोकरो भले टुरणो निनाण कानी भर धँ भाई भाई दोनू एक खेरडी री गँरी छाया कानी—पाँच मिट घन पीढावण न ।

भावा हुया ही हा, पूरो पसवाडो ही को फोरघोनी, काहो कोटवाळ भावतो दीस्यो । सिनाथ बठो हुग्यो । बोल्यो, ‘भाव कोटवाळ, गुणा गाँव री गज्जा ?’

लम्बो सात ले’र बैठतो बोत्यो, ‘गाँव री गल धारें सू किसी छांनी है, जजमान ।’

“हू तो मबार दस दिन हुग्या, गाँव ही को गयोनी, भा रोही भली भर रहे दोनू ।”

“जद ही पच्चीस तीस हळ री निनाण काठ लियो, नु वों पइसो ही को सगायोनी, काम री तो मसीन हो ये दोनू, म्हारो वो प्यार हळ री टुकडो ही ऊँ धँ माये पडथो है ।”

“खँर तनै तो ऊमर ही भायगी पिचपम छप्पन री, है ही खासो थावल, पण छोरो है, सुगाई है मोटियार जवान वीर ।” भा कह’र सिनाथ जाणू बीर खयोड भासुवाँ आगला तीणा खोल दिया हुब । वो बठो बठो सजळ हुग्यो । टोपा गाला पर हुता छोडी री दाडो में भा’र भदीठ हुग्या । एक मिट बो की को बोल्योनी ।

‘क्यों कान्हा म्हारो कारू है तू, म्हार कारू कोई नाम है तो भुळा, भा कायरी किया भाई धार ?’

“जजमान ये म्हारा हो, धारें सू भाग ही मैं केई दफ हुब सुब री करो है म्हारी कोटवाळो मरी बद ही ये म्हारी पूरी मदत करी, गुण तो एकर ही हुवे मिनख रो थोई मान हो ।”

“हा तू कीं कइ तो सरी ?”

‘छोर रै भा रीठइती माडो भायगी, नातो कर’र खराब हुग्यो, पइसैं सू ही खलेट हुग्यो भर मानलें सू भीर गयो, म्हारो धाकेलो भी ही है ।’

“धारी पार नहीं पड तो, दो रोटडी आपणी भठे सू लेजाया कर ।”

“बात रोटी रो को है नी जजमान, बात है, लुगावडो है परल पार । बीने सावण भर अतर फलेल चाईज । आ तो कई सेठापी है, सेठ कीन हीं हाप रो मल ही को दनी, ईन तो घणो ही टूठे । कान पापी है जजमान, सुणू जद काया धणी ही सीजै, पण जगत री जीम थोडी ही पकडोज । छोरो पाच पाच सात सात दिन रुठन न जाव परो । छोरो भर छोरी है भगली रा, ब मनै सेक, टुकडो तो माँग वा नहीं हू तो लाठी भर भीत बिचाळ आयोडो हू—कीन त्राळ बतावो ?”

‘लुगावडी हो हाथ हिलावती है सी कीं तो ?’

‘सेठा र पोठिया थापन बाखळ बारन भर बठ ही पेट भराई करल मोडी बघी मन र्म भाष जद भाव गोला रा टींगर कई ईन बान घर कानी भाका घाले लोह ही छोडो हुव तो कळ ही कीन आपरी साथळ उघाडया प्राप हो लाज मरु घणी ही एक चड भर एक ऊतरै पण बळ बिना बुद्धि वापडी है ।’

‘तो छार न समभाळ बघेई ?’

‘ना भो, बी राड र में रती हुव तो घाटा ही क्यारा गुटको से’र गोला जिसो ही बो है, एक रती बिना पाव रती है भो ।’

‘की तो दुनिया है रे धिगाण हीं उठा खडी कर ।’

‘नहीं माईता सूई रो मूमळ तो खैर हुग मरु, पण सूई ही नहीं हुव जण ?’

‘हा भा तो है ई भवार ?’

सेतडो देख’र प्राळ कदास ो मण काट करम में निष्ठी हुव तो, धारो मन देख्यो जद दो मिट दुष छांट लियो धार भाग, नही जद हू तो इसी बात नै जीम प ही को चढण दूनी ।”

मिनाथ बीर चर सामो एकर गौर सू नेक्यो बीन लागी गरोब डोकर रो प्राण्या म ऊचो भावती पीड री तस्वीर भर चर रै सळा मे बीन फोडा घालती बेजा परेयानी । बात रो रुख फोर’र बो बोत्यो, ‘कोटवाळ, एक जीपडी गई दीस ही गांव कानी ?’

“हाँ माईताँ, भूल ही रयो हू तो घान कणो—गाव में आज याणों आयो है।”

‘कियो रे?’

‘पीरू गयो कृम्भार छाणा रो गधियो ले’र आवै हो रोही सू । सतान सिग लकड़ती नियाँ गोरव कउ ही मिलयो । साळा गंडा, म्हार खेत सू छाणा लाव घर मटकडी माँगा जद आख ही को उघाडनी खेत थार बाप रो है, हासल तो म्हे भराँ घर खावकी तू खाव ते टिल्लो’र बोरियो पटक दियो भर दो टेकी ओळाय रो गुदी में, रोवतो बापडो घरे आययो । आदमी भेळा हुग्या बीरँ घर बाग राणोराण ।”

‘केर?’

‘केर दो च्यार पाखरिया बीन थाण लेयग्या रपोट मडा’र पाछा आयग्या । लिखाया पछ थाणा तो गाव ही । थाणदार रा केई कमाऊ वेटा है गाँव में ।’

‘आज केर?’

‘एकर लो घणखरा में इमी हुई, मत पूछो । गुवाड मे कित्ता हो सतान सिग घर जोरावरसिग खडा हा । जीपरो हरडाट सुणो जद, कण ही कह दियो मसबदी आळा आया है जिक्काँ रा मूडा जीन हा ब बीनै ही भाप छूटा, गवाड मे मिनख रो बचियो ही को रँयोनी भळे ।

‘सिनाथ ही कँऊ हो म्हार म तो आप इसी ही बीती अवार, पण, काठाँ ताई ला र गिटग्यो बात नै पाछो ही । पाणी पी’र कोटवाळ टुरग्यो ।

कसिया ले’र दानू माई काम में लागग्या, छोरा खोडमें बलघ घर रोडती आडा ऊभा हा । परिपाँ सुगाया ही खोरै ही । मा आई बोली “ल भई हू तो गाँव जाऊँ, छोरा एफली है ।

‘आज इती बैगी ही, कियो है भूळरी रे?’ सिनाथ पूछयो ।

‘बाँ तो भई काई ठाँ चेतरे चढमी का नहीं, आखयो पीछी अर चर पर खून रो अँकार ही को गीमनी, बारह बरसाँ रो बेग है चुसगो सकाही । आज मरञ्जी न भळे चढग्यो हाव । जाऊँ मभाळू तो मरी । तू?’

“हूँ ही आऊँ काल ताई, निनागियो पूरो कर’र ।”

“रामदुवार भाळो मीत वेमार हो रे, दरसण करण नै सोण-बाण भाव जाय हा ?”

“धणो वेमार है ?”

“सुणो तो है, पद्य कीं ठानी ।”

“तो जद काल नहीं भाज ही भाऊ मिसणा जरूरी है बी सु ।”

सिनाथ र मनमें एकर हळकी सी एक चिंता उठी, पण पाणी र बुल बुलसी पाछो ही बैठगी छिए भर में । ‘भाग री भाग सोचस्या पैलां कत्रियो कर्बो ।’ सोच’र पाछो ही बो भापरै बीपार में जुटगयो ।

□ □

लिन भर रो पकवयोडो भर गू गी दुनिया रँ दान्ध सु नाराज हुयोडो सूरज, होळ होळ वादळां रँ बिछावणा में बड’र दीक्षणा बाद हुगयो, जावतो जावतो भापरी नाराजगी जाणू भायू रौं भाभ पर छोडगयो हुवै ई छातर ही बो (भाभो) अवार एक गीरी भोल भ हुव्योडो सी लागै हो । हवा बाद ही भर कमस जादा । गांव री रोही मे दूर दूर ताई ऊभा छेत बिरखा रो अडोक मे मीन भर उदास हा । भाभी रोही पर उतरतो अघेरो फुरती पर हो । भापर भाळा कानी उडती चिडकल्या री उतावळ भरी चीचाट घर कागला री काँव काँव साग रळ र ही गुण घरम सू यारा यारा ही हा । गाँव कानी धिरत एवड भर बळघ गाडां री कोई कोई सुरीली टोकरी काना रँ रस्त चेतना में उतरती राम री सिस्टी माड ही पण सिनाथ अर सुगनो डाँगरा रा कियोडा दो एक गळगा ठीक करण म लाग्योडा हा । बातावरण र मून न ताँडतो सुगनो अचाणवको सो बोत्यो “भाई ये गाव जाऊ हा नी त्राम को छोडानी अरबै ?”

‘अरे हाँ जानों है नी ।’

बादलवाई रात है अघेरो बध जावो परा जळती सी अरु कां री ब्यांत राख्या ।’

ख्यात तो लावेसर बीरवां राखीज बिना दीस्या कियां राखीज अर भापरो ख्यात सू ही जे कोई जिये तो बीगो सो मरै कुण ? कोस भर भू है अवार जा बडस्पू । तू मचली पर नहीं सो’र डूच पर ही सोए भलो छाटा भावै तो

तिरपाळ नास लिए, भूपडी मे झाडो मत हुए, पान रो डर है—अ सूची है नी ।”

“टोक है ।”

सिनाथ टुरग्यो । बादळा रँ कारण अ घेरो काजळ सो गरीज हो । भादवा सुदी चौथ ही की चाद तो अकास मे हो ही, पण बीर घाग मुकाम री सीध ही तो को वधे ही नी अबार, पण रस्ता बीर पर्गा लाग्योडो हो, ई खातर पण आपरी सज आदत म वध्या मत्त ही लगासर चाले हा । पावडा सो सबासक बो चाल्बो हुसी, भागरो एक बळघ गाडियो मिलग्यो टोकरी बाजतो । “कुण हुसी ?” सिनाथ पूछयो ।

‘ओ तो हू पीयियो नायक, कुण सिनाथ राम ?’

‘हां एक तो सागी हू ।’

“भाबो, बठो गाडे पर ।’

दोनू साईना सा ही हा, सिनाथ बोल्यो, ‘नहीं दे, ई सू तो उपाळो हूँ बगो पूगस्यु, पाको बळघ है, क्यो वापडे गळ तरँ न मारु ?’

‘अघेरो हू ओ, ई खातर कणो है, फरसी तो पावू राठीड, बीरो आर्या जानणो है पण अघवे ई पर की निघडक रस्यो । भाबो बठो, वापरुँ किसी उथावळ है, घडी दो घडी मोडा ही तो पूगस्या, इत्ता ही तो बात है ।’

बठग्यो बो । गाड पर लीलो हो मण सवा मण, सिनाथ पूछयो, ‘नीलो घरे ही ले जावे है का बेचै है कीन ही ?’

‘न बेचू अर न घरे ही ले जाऊ ।’

‘घा किर्या हूँ को समझ्योनी ?’

“घनजी कने सू रिपिया लियोडा है—छेती पेट पाचसक, बो ब्याज को लेवनी अर हू ई रा पदता को सू ना ।”

‘चिट्ठी लिखायोडी है ?’

“नही घडाण सट, जुगावडती री दूम मेल राखी है ।”

‘ब्याज पाई लेव ?’

“ब्यार तो समझो ही ।”

“ब्यार नहीं पांच समझलें, तो ही पचीत टुवा तू मण खड तो रोज लाव ही है जे दो रिपिया बेच तो ही महीने रा साठ तो हुवे ही है ।”

“वाई बहाऊ ?”

मैं तो गुली, धारें की देवा लकी हुयी, पाणों भावो बवाव ।”

बन मगळी गाय गारें बंया घाजी रें अठै गयो ह्यो, धारें मू घब
वाई दिगळ, भाभी धर सुगावही री दूमां अहाली मेस'र रिपिया सायो हू भाठ
स चापा री देवण नै—धर रिपिया मी नडा म्हारें जीवठ सरच रा समभन, बान
गिटा र काठपा है भाज ।

‘समान ?’

‘सेठ री हाट मू तुलवा'र दियो ।’

जीवठ सरच में म्झान तो ररें नहीं सही, धर घाळ' टीगरां न तो बसां
बतो कीं, भाईटा रस्तो गळन पकड लियो, गघालेट धर'र इयां हीं छोड दे'सी धर
किचरीय ती इतो पोभो, दो साल ही मु दो को हुबनी, बण तीस दी तनें घा ?’

“सिरें रघ धर गुमान सिंग ।’

‘एक साठगोर अर दूसरो दाहमोरो है ।’

‘बास जाणो है बाण गवाई हुसी ।’

‘गवाई घाळा तन बितो सूको छोडसी जानी बण र जायी धारें सायी ।’

‘तो वाईं करतो, इयां तो घं बसण ही को दनी गोता ।’

‘पछु धारें बारकर किसो पीरो मुह बरदेसी बाणु भाळा, छेकड व
राजीपो ही तो बरवाती वो काम भापां हीं बर लेंवता, भापणु धप री प्रघवी कीं
मामळ ही पडती भगल नै ।’

सिनाय बीर धर सामो देख्यो, गई-पोही धर एक बुविघा घीं पर हायी
हुयोडी ही । ‘हीर, जा अवार तो, फेर मिलस्यां,’ कह'र गिनाय भागीन टुरग्यो ।
सोचे हो “कोई लडो धाव राजीपो करो धनी री चांदी ओर नहीं तो जीमण रो
समान तो ई री हाट मू ही उठै । हीर ही मर चाव ध्याव हुव, काळ
पड जमानो हुव, चाव बाड धाव ई र पाछण नीच तो घाणा ही पड ।”
फेर सोच्यो मोड में मोडो, नहीं सरयो पाछा ही बाला, दिनूरीं चाठ, अळै
विचार भायो, बठ किसी बीनण्यां बठी है जिको कावळ मानसी घापा न
देव'र, मोडा हुबैला दो च्यार का कोई पाळपाडो टुकडेल बठो मरतो
है लो । इयां बरतो बरतो पुगयो रामद्वार र बारण सामो । रामद्वार री
धारली बत्ती जग ही निमघी निमघी । बारण मू कोई तीनेक पांवडा उरियां

घोळी घोती पैरपां एक लुगाई साथ बीरं एक छोरा, पादर सोळ बरस सू ऊचो नहीं हणो चाईजं, लुगाई रं हाथ में एक गांठडी, छोरें कन एक पेटी बीरं कनकर अघर से निकळया । लुगाई गे मू डकपोडो हो । बण जा'र वारण न घक्को दियो होळंसी ।

“कुण हुई (हुमी), बी वारण आग्रा” बीन सुणीज्यो । ध्यान आयो बीन, घरे मूळ वारणो तो बीन है घा तो साघां री सुविधा खातर है, बी च्यार पांवडा और आगोनी गयो । बरस सित्तरेक रं एक साघ वारणों खोत्यो । न बीन घणो सूभं भाळ वर न अवार बो दो बरसां सू घणो बार टुर फिरं ही, अघमाणस सो आपरो छोटवो काढ इसो आदमीडो । होळ स पूछधा सिनाय ‘मैतजी म्हाराज रं किंया है, दरसण करतो ।’

‘बिचेत पडिया है रामजी र, आंस ही नही खोल घडी आघ घडी सू कदेई बोल, दरहण करन न आही वेळा मळी घान, घरे जावो न नींद भेळा हुवोनी ।’ वारणो ब'द हुग्यो ।

सिनाय, घणै उळभाड मे पडनो ठीक को समझ्योनी सागी पगा ही टुरग्यो पाछो ।

पांवडा दो एक आगोनी जा'र, चाई जची बीर बो पाछो ही मुडग्यो अर आ र वारण कन होळं स उभग्यो । चौक नै हुय बण सुण्यो, ‘सत्ता कुण हो?’

“काई ठा हेठां, घो तो नी पूछियो ।”

‘पूछणो चाईजं हो खर, एकलपो ही हो काई ?’

‘हुणो तो एकलपो ही चाईज, बीजो लागियो नीं कोई ।’

फेर बोलारो ब'द । मिट दा एक ओर ठर'र बो मळ टुरग्यो पाछो ही । सोपो सागीडो पडग्यो हो । गांव रं मानख री चेतना घरती पर सूतो गगा बने ही बघीइ देंवती । आंधा हुयोडा मुत्ता खाली लहता सुणीज हा ।

बीर आगकर एक भीत सू वूद'र, एक कुत्ती लारं धव सात कुतिया मदा'घ, दो तीन छोराव, केई घोरवा करता बाढ रं एक गळत मांकर एक बासळ में बढया, लहता लहता तो घाया ही हा, आघ जा'र मळे महाभारत खडो कर लियो । कीं एक न नीच नास'र पफेठता लाग्या । घर घणी कीई बोलतो सुणीज्यो “ठरो ये रोयलू घान, अघ घडी ही आंस मठ मीचण देया ये, रीसां बटत एक रं तो लट्टु री टेकदी दीसं ही, बास रं ऊपर कर बोक हो या । एक

अध बूढ़ो घर लाचार कुत्तो, भीत को चड समयोनी, पढी पढी कीमीस वर घर पाछे पड हो । सिनाप सोचै हो, "काई नाव काडसी बापरो, पण कठ तोगना ई न तो अँबलाई खा'र ही बीनपी रो भूखो जासी बापा वने हीं । मां दुरदनिया र बरस में दो महीनां हीं पाती आवे मिनखां भाळ दाईजे पुरो साल मिल घान तो भ' आखी बसती न घर वरल भर मा आप मे सू साबतो कोई सुगन लिया हीं को लाधैनी ।"

दो घरे मा'र चौकी पर पडघ माच पर उखराडो ही भाडो हुगयो, पण आख्या में बट कठ ? सोचै हो लुगाईं घा, घनजी रो ब'न हुणी चाईज चाँदा, बाळ बिषवा हुयोनी है सासर सू लाईं बो अळोतळो भायां कन ही है, हुवली पताळोसेक र भडगड छोरो ई सागं, ई रो ही कोई भतोजो घतीजो हुणी चाईज इसी गू गी थोडी ही है जिको इप मीक दूज न साथे लाव ही । माडो, 'ऊमर पच्यो बँल की नाई भेलो कियो भर रुखाळो राखो सापयाळ दाईं—स्कूल छातर मागण गया तो ही को दी नीं काणी कोडी ही साघ हा म्हे तो आपर रस्तं भागै भाठा ही भाठा मेल्या बण तो अळेवण ले'र मा लम्बी हुई लागी मन तो । बेई दफ देखी है मैं चादा न रामद्वारें में । सफे भूक धोती गोहुवो रग हाथ मे तुळछी रो माळा, साधा रो सेवा घर कथा वारता में भाग, ठीक बाही हुणी चाईज, मू डो डवयोडो हो भला ही हुवो, म्हारो तो को होनी ।" सोड हो, पण पण मन बळग्यो मैत कानी और उठग्यो 'दवाई देव घर डोरा डांडा ही कर, बरस साठेक रो है। भा बरसा में खामो भारी पडग्यो, डावो हाथ थोडो घूज्या कर । विश्वास आपर बापरो ही को करैनी चाब्या रो भूमको का तो आप कन का बाईं चादा र हाथ में । काछ रो साचो ई जुग में हुवण रो रीत ही किसी, तुळछी रो कच्योडी 'दहु दाम सवारहि घाम जती' कूडी थोडी ही करे रामद्वार रो मायली भीता पर दोहा घर चौपाया मोटे घर मौवण आखरां मे लिखवा राख्या है सभा रसायन हम करी, नर्ती नाम सम कोय । " राम नाम की सूट है " सुनहु उमा ते लोत घभागी, हरि तजि होइ विषं धनुरामो । रामद्वार में ही ऊपर एक कमरो है पत्रो बीमें गड्य पर गलीचो बीं पर डोलियो काच घर साज सजावट इसी क काठ में ही काम बापर । एकरो एकदो साधु सत ही आवना देखां वने कदेई एकर एक चेलो राख्यो केई तिन—मारवाड कानी मू आयोडो हो भट्टार बीस वरम रो हुवला महीनो तवा महीनो रात्र'र बिदा कर दियो, और आयो एक बो ही को मुवायोना इकलतारियो मरै । काम घर दाम र लोभी न दूजी अखलाई क सुवाव । मैत्रजी रो घणवरी राटी सठा र मठ सू ही भाव साधुडो कोई

आयोडो हुव तो गांव घणो ही बडो है । इया रामद्वार में मरखे परखे हांती पोळी बापरती ही रव । आपर मतें, ओ कीन ही भोरो ही को चखावै नी, पडी पडी वूमीजो, का बूपण आवो वीं पर, चादा ही भला ही सतटावा चीनै ब दा तो मजाल है हाय ऊपर करदें—न्यो है केई दफें । 'है जिमो ठोक है' मन कयो, 'आपरा किया आप भोगसो आपा क्यो कीगे ही मल निचोवा, छोडो,' अर पसवाडा फोर लियो बण, वदास की आन लागें तो ।

मन किसा मान हस बन्झनी चावें हो पण वो फकपोटी टीटण सो पाछो ही सापण दिस म आवतो सागी तातण ही डूड हो । 'काई ठा हेठा' ओ हेठा (सेठा) कुण हुणो चाईज, जरूर धनो वा लालच द ही हुणो चाईज, कागद पत्र का कोई कीमिया चीज भळो करतो हुसो, चेतो है चीनै वीं, तो समभतो हुमी चीनै पुछ र । म्हारो खको ही, पक्कायत वीं वन ही पूणसी । पूगो आपणी नीयत में किसी वेईमानी वस रिपिया द्यो सो आपा नै दण्णा है, मुस्कल तो आ है क अवार व पार किया पडमी दिनूग आपान दस आदम्या मे जेक्यो अब हू तो एक निन ही को राखू मो धारो खको लेजा अर आपा कवा, सा अगार तो को बणनी तो बात फूठरी को लागनी आपणी पोत्रीमन जावें । रोड वेचणी पडसो वच देस्या? पण डण डोकरी कद मानसी, मूळ रो मुरखोज ही वें को जाण नी ठा लाग्या रोळो ही है ।

पसवाडो मळे फोरयो, विचार और कीनै हीं चालू हुग्यो । समभण रो, असली गत आ है कैं, अवार रो टम में, आप कर्न हुवें तो कीरो मदत करदेणी नहीं हुव तो उछाल माटो करम मे नही लेणों, काई अणसरयो जावतो आपणै, विट्टो मांड'र रिपिया दूसरें नै दिरावण छातर ? ई तक न का'र मन रो एक दूजी धारा सबळ हुगी, 'काई जुलम कर दियो त, गरीब वामण हो, टीवी हुगी, धारो बाळपोटियो हो, छोरी ही परणावणु साव, सास निबळघां सू पाच निट पैला बुजाळियो तन, आख्या भरलो होळं होळं बोल्यो, 'घर में तन ठा ही है । खाफण रो पूर ही मसा पार पडमी, दो महीना न छोरी घोरिये चढै तो वीं सा फेर आख्या भरीनगी बोनी उद, आसू पडता रया, दलतो रयो धारें कान । एकर हाय उठा'र छोरी सामो कियो, छोरी खडो ही वीरो ही आख्या भरी वमवसीन आसू पड, इया ही लुगाई—उन वीं वेळा काई कणो चाईज बो कह दियो त जुनो घोडो हो खेल्यो है । जाट है घरती रो बेटो है—हठ री आस राख, घरती राजी हुगी तो स बाता हुनी—इत्तो कायरी क्या सात्रें मन म ।'

दुधड चिन्ता में रात निकलगी, मायो की भारी हो। घास घड़ी डो
 घटी ही मुश्किल सू लागी हुसी। कोई कोई सो युक्तो तारो रह रह घामें में
 टिम टिमावै हो। आख्या खोली तो बीन घास पास राउ रा निरास भर घायत
 कुत्ता कूकता सुणीज्या। भोर में राजा कणु री बेंडा, बोरी किरछी बीन बडो
 बोभी भर कुसुम लागी—पांच सात गिडक तो बीर फलस भाग ही लाग्या बीन।
 माच पर सूत सूत ही बी न एकर बिरकारघा पण थ कद मानै ? छेकड, एक
 लकडती ले'र उठयो। बो कोई दूर ताई काठ'र भायो घानें दो एक लुगाया र
 मूठ सुणीज्यो बीन मैतजी म्हााराज तो घाम पधारग्या भाज, बहु टी कडती।
 मिनाथ सोच्यो, हुई जिकी ईश्वर री मरजी, विचल दिन रा सेठ कनै चालस्था,
 मळे बो कदेई तेगो भेज'र बुलाव ई सू काई फायगो, पूछण म किसी दोसापति
 है।'

□ □

मैतजी रातने काई ठा बिसी बेडा मरघा घर बियां भरघा, घा, वा तो
 भगवान जाणै भर का बीं बेडा बीं बन मौदूद हा बो पण, मैतजी घाम पधारग्या
 बहु टी देवण घामो' घा बात सूरज ऊग्य सू पांच मिट पसा हीं गांव री
 समझदार खतना म सगळें फलगी नाई साय बिना बडे ही तेडो करवाया।

मिनाथ म्हाघो'न, घापरी वेमार बाकी सू पर री हो योई गुरबत कर
 हो। बाको भरपां पध हो, बींरें तोळो माणे तोळोमासो बिणुविण रैव ही है।
 सयाड में एकर, बीं गडबड हुई ही थीरें। मोनरो एक् छोरो हुयो प्रवार बो
 मिनाथ साईंनी हुतो। महीना टाई तीनेक रो हु'र, बो घालतो रयो। डाकण
 सेलियो बताव थींन। गांव में एक कुम्भारो हुया करती बरम साटेक री ही बीं
 बेडा। टोडी घर होठां पर बीर छीनी घर सम्बी क्वाटी हुया करती। हाळो
 गियाळो तिबारी देवण भांबती। बीनें भावठी देग र घरां म लुगायां साल छव
 महेना र टायरी नै ले र साल घर झूपठां में बडग्यावती। बाकी ही बतायो
 एक गिन थ 'दू तो ही पानीन गयोडी कुव पारी मा गावटी टोपटिघ रो बीं
 करे हो स रें। घागाबोज ही तिबारी न मरा बडो ही, पामांनिये में सूत छोर
 नै देग र पाटी ही उठयो छार तो बा रात ही वा बाकीनी—टूटघोड पूनछो,
 मुरभा'रग्यो दिगूग नै।

सिनाथ र आ बात, बी बँळा की कम ही समझ मे आई कै इरा लुगाई कदेई डाकण हुया कर ठाबर न देख्या हीं बो चल बस, इयां तो बा कीनी ही, जीवण ही को देनी, बा छो रोज ही कीन न कीन तो देखती ही हुवली, गांव पछे खाली तो को हुयोनी ? बीमारी सू भजाणु आदमी इसी ही भणपठ बाता कर । बाकी न बण धणो ही खोद'र पूछयो, पण बा बीन समझा को सकीनी । बा कुम्भारी जे जीवती हुती तो बीर जा मे ही क बीन पूछतो वो सावळ पण बा भापरी आपीन उठगी ससार सू सारल बरसां-रोग घर रोटी दोनों सू हीं दुखी ही बा । पछला डोढ दो बरस आघापण मे बीत्या बीरा, आपरो खोटनो ही सावळ को काढनो नो बीं सू । इतो ठा सिनाथ न जरूर लाग्यो कै बीर पांच सात, जिता टाबर हुया बै स भडग्या एक् एक् कर'र । अवार बा गवाडी ये ५ हुयोडी पडी हे । बात रो नितार किया काढू ई रो बीज बीरी चेतना घरती मे दव'र ऊठो उठयो, सुवाव रो विरखा न अढीक ही बो ।

बीरो मामो हा, अब तो सरीर सात हुग्यो धारो । बीतराग घर एकल विचरण भाला सत हा ब । बा न एकदिन पूछयो सिनाथ-डाकण र बार में । बा कयो 'डाकण स्यारी कीं नहीं बेटा, डाकण आदमी रो निजर ही हुवै, टाबर-टीगर रो कमी रो एक गरी भूख जद की लुगाई रो आख्या मे ऊतर'र दोवडीज, बा ही डाकण बण'र भिनख रे ऊगत वू टै रो नुक्साण करै—काळै बीपार काळै काई काळी निजर बज बा ई खातर बेटा, न आपरी आख्या सांफडी राखणो कदेई, घर बस पढता न आपरी मुट्टो ही । ई रो परणाम खोटो हुवै—साधु हुवो चाव घर बारी-सपळा न । मन घर हाथ रो उदारता रो भो बीज, जणू बी दिन सू ही, सिनाथ रो चेतना मे ऊग र ऊचो आणो सुरु हुग्यो हो ।

बोवा रो दूध नाडा मे मर तो बो सरीर न दूबळो कर'र काई ठा किसी रोग पदा करदँ, ई खातर काकी रा बोवा सिनाथ पूँधतो, घर आपरी मा रा ही । साल नडा, पूँघ्या हुसी । बो काकी पर मा रो सो हक समझ घर काकी बीन आपरो मोमी बेटो ही परप राख्या है । अवार दो तीन दिन सू ताव भाव है काकी न मलरिया । बो बोल्यो, निनाण तो करलियो काकी, अब तो जच'र विरखा हुजाव तो पोबारा पच्चीस है ।'

'लाडेसर कोठी में ला'र घालदा जद जाणीज खाली विरसा सू हीं काई हुव, भोला नहीं बाज पून में सुवाव हुवै, धणी बाता चाईज ।'

ॐ ये = संस्मर

इत्त न बीर कानी में भवाज पडी सख री, भट ऊभी हुगी ।

“क्यों काई हुयो ?”

“बैकुटी भावै दीस, सख को सुणीज्योनी तन, दरसख तो बरखू ।”

“ल हाय भास लू पडली कठ ही ।”

‘नहीं रे, पैवटी सू एक खोपर री डोडी काढ’र लाए देखा’ कह’र बा होळ होळ फळम भाग जा’र ऊभगी । सिनाथ ही भायग्यो, काबी नै खोपरो भला दियो । हरिकीतन, डोलक, जीभ भाखर भर सख री भेली अवाजी सू ऊपर रह रह कदे कदेई रामदास जा म्हाराज री ज’सू गांव रो भाभो गूज हो । जुलूस सुख हुग्यो, भीड तर तर बध ही । बो ही गळी रँ एक नुक्कड पर जा’र ऊभग्यो ।

बकुटी बडो जोरदार सजायोडी । च्यार भादम्मा ऊषा राखी ही । मुकटी में मैतजी बठा हा । नुवां कपडा, बढिया मलमल रो भगवा सापो, मलमल रो घोळो, आपरो सागी शरयो सजायोडी, लिलाड मे केसर रो गोळ टीको, ऊनी घासण पर बिराजमान, हाय में नव मिणियां रो तुळघो रो एक मोरखो लारै सीताराम जी रो एक किलण्डर । भागै एक गोताप्रेस री गुटका रामायण टिगटी पर जचायोडी भर धूपदाणी में प्रगरबत्त्या चेतन हुयोडी, बाता वरण नै सुपा घत कर ही । लकडो रो एक लम्बो हत्यो सो डोडी नीच दियोडो, डिग नही म्हाराज ई भावतै सारू । लारै लुगाया, छोरा-धींपरा भर भागै पचासू गदमी, पांच पाच, सात सात मिट दाद कूद कूद’र काषी बढळ लोग-बो बीसू प्राग भर बो बीसू ।

बूढी भर भर म सार-बार घाळी, घरां सू बार आ भा दरसण कर, वेई दागळां पर खडी, वेई बीनण्या बाडा पर काणू गू बटां में ऊभी भर गांव री बेटघां भीड में रळ कीतन करै । घणां ही लोग नारेळ खापरा भर पतासा थडावै हा । घनडी कदे कदेई रेजगी उछाळ हा मुट्टी भर’र । नायक मेघवाळ सेंसी भर घणसमभ टावर चुपै हा । लुग यां बात करती सुणीजे ही बाईं भ तो जीवतां सू ही भाखा लाग, इसा तो जीवता ही को घोप हा नी ।

सिनाथ री दिस्टी मैतजी कानी गई जी भरर दो मिट देखो वण मैतजी री लास न, फेर तुगाया कानी । एक तुगाई खीडर हुयोडीं भाग कीरनन बोले भर फेर पांच सात मिट ठर’र ‘रामदासजी म्हाराज री ?’ जै सगळी भीड बोलता । देखता ही वण भट भोळवलो हां, रात घाळी ही भा लुगाई है चादा

बाई । जुलूस बध हो प्रागोनै—निकल्यो भटगो, सिनाथ बैठे ही खडो रैयो
बाई ताल, मन मथोजेणो सुरू ह्यो मायो भरीज्यो विचारा स ।

किसोक सजायो है ई नै, जीवत सू दो चंदा बेसी ही नहीं, साब भूठो ।
सास रें बश्मो लगायो है, काई देखू है प्रब ओ देखण भौळ दिना में ही, को
देख्योनी भरण, जवानी में पग राखता ही चश्मो भण डाभर रो लगा लियो हो,
मोटे मोटे आखरी में च्यारागळ छड सामो लिख्योडो थापर कमरें रो भीतां पर
'रामनाम की लूट है' भण सायत हो क'ई वांच्यो हुब, सिवा रो सुख भर नाम रो
रासि लूटरा न प्रायोडो, काम भर दाम र डोकां सू बूटीज कूटीज लूटीज्यो,
बो ही भळे रामद्वार में, डाल भर तरवार कमर मे लटकती ही रही, लपोड म
बसर है—वीरो भा सास गू गी दुनिया दोर्या फिर सजा'र ।

मैं हेंको कियो ई न भोयसे रिपिया रो भल आदमी न कयो "मैतजी
बी गरीबणी केनै टक रा दाणा ही निठे बापर पइसा हूँ भरत्यू प्रापन, ब्याज
री कीं भर करो ।" बोल्पो, सिनाथ घौरा कने सू च्यार अर पांच ताई लेऊं,
घार सू दो रिपिया सईकटो ।" हू बाई बोल हो, सोच हो, बाई ई रें लार
नागृहिया रोब, गधो है इत्तो ही को समझनी, घोर मदत कुवै में पडी, च्यार
रिपिया ब्याज रा ही को छोड सकनी रीस तो एकर इसी भाई, धौळाय री दो
चेपू । बीं कुमाणस रो सास कानी भाकण नै ही जी बो करनी । फेर सोच्यो,
सास तो मान अपमान सू ऊचो भर रागातीत है, ई सू ईसको ही किसो ?

फेर बीनें नवली दरोगी याद भाई—बीस साल ताई रामद्वार न भूड
कायो ऐंठा वासण मांज्या बपढा घोया, उबरघोडो कोई टुकडो कदेई भला हीं
सांनियो हुब—दिन भर राम राम करती, हंम'र घोलती, मैत री भसली चेतना
तो बीम ही । भोगियो हो बच्चो सो, पहग्यो कीं बिरजां म बोली गुरू म्द्वाराज
घाटो ही बठ राखू, कुत्ता बिल्ला बो छोडनी, बीं भरें करो । गुरू म्द्वाराज
फरनायो, सीपा नास'र च्यार लोथा नागसी दे नास, ऊंरर घोडो तळाई रो
मुरज छोडो छोणे घुरका'र पांच सात दफ छिहबल, चिपग्यासी सीपां र, कई
बस बो ऊनरनी, पक्का करा'र ता किता बरस रखो है, हां बीनें तो किता
बरस रेणा है, थापरो तो पट्टा तिंछायाडो है हजार बरगं रा । बण बापडी चादा
बाई नै थरब करी पण काळी भळी न बोडाळी बा चेनी तो ईरी ही । दरोगण
परणो टूटी ता देखती बं पक्कें भर पत्थर लंगाव रामद्वार रो मैत गयो—दोतियो
भर बीबळी छोड र बिरी ही गपां रो भार ले'र सिर'प' पण हवाजी साब खाली ।

दरोगण तो पाँच सात साल भापटं धोरिय में काढदिया हसती मुळकती, भर एक दिन मिटा में गई घोडियो कूग'र, भय घडी ही दोरो कुण हुब बीर ।

एक नायण घाई डोड दो महीना रही ई कने, फिर फिर जीमती घर में । पुराण दिनो सू घाव जाव वताईज हो बीरो । एकर खासो भळोतळो ते'र बिदा हुई । एक सोनारी रो ही ससकार हो, तीन साल पला ही तो मरी है बा ।

कोडिये रो दाणों ठाकुर द्वार बाळन नें चढ, दो साल पला भगरू बाणियो बीस मरी रा मटरिया ते'र गयो—पाँच हजार रिपिया लिया तीन रिपिया सइकठ में । व्याज चढग्यो तीन महीना रो बीन बुलायो गयो वो, साथ दो भापटा भाएला पापेला ले र, हू बठ ही तो हो बी बेळा । बाणिय कयो 'भापरा रिपिया लेवो सा, स 'याज मन म्हारी चीज सभळोवो । मैतजी मटरिया ला'र घर दिया, एक बोधळिय मे ब घ्योडा । बाणिय निजर गडो'र सावळ देरया बान, बोल्यो 'हू काई करू भारो मन तो म्हारा घाईज ।' मोड रो भू घोळो हुग्यो बोल्यो 'क्यों ?'

क्यों रो मन काई ठा, थार सस भावै, काईठा कीरा है ? पराई जिनस म्हार काई काम री ?'

'नही भई थारा ही है भ, हू वूड घोडो ही बोवू ?'

'ये नही बोली, तो म्हाराज कूड बोलण री मन ही सोगन है, है तो थार भठ ही देखो दे'र भूलग्या हो तो चेतै करो, 'कह'र वो खडो हुग्यो, उठतो उठतो, भा भोर कही ब है म्हारी बाई रा, बा जासी काल सासर, सोधण री ताकीदी किया ।' मैतजी रो काळजो ऊषो चढग्यो । सुनार न बुला र दिखाया ब, बण कयो भ तो भाठ दस रिपियां रा है—पालिस कियोडो पीतळ है । मैतजी रो सास तो को निकळघोनी, बाकी कीं को रयोनी । आज री घडी काल रो दिन मोडो कूग'र रयग्यो मांय रो माय ।

दबाई देवण जावतो, कठ ही, फीस पला, सुरू सुरू मे रिपियो पछै दो कर दिया । घर में पण देवता ही बेभार मरग्यो तो ही फीस को छोडतो नी । पण घन फीमा सू भेळो को हुयोनी, वो हुयो डोरा डडा सू । कूख बट करण रा नुमला हा पेटेट बिघवांवां पूगती लुकी छिपी—नायण सुधारी भर सुनारी केई चेल्या ही दलालण । बा कन सू भावता पइसा माय रा माय । इया हीं कीरी

हीकूल खोलन न देवती डोरो घूड में लट्ट, लाग्या खुलगी की रो ही तो चादी तालो साल सेवा भर चढापो । नहीं खुली तो पइसे रे डोरें रा पच्चीस तो सामा ही धोखें हा । केई गरीबा रा खेत दिक्का दिया भाध पइसां मे केया रो धन (घाय, भस, एवढ प्रौठारू) ।

मिताय न रह रह अचूमभो भाव हो, देखो अण चौपायां लिख राखी है ई डग रो-सुनह उमा ते लोग अभागी, हरि तजि होहि विषय अनुरागी' भर ईसो अभागी घरती पर भळें कुण हसी, पगा लाग्योडी को देखी नी हूंगर कानी आख्यां फाडी । ई कुमाणस रो लास र लारें सोताराम जो रो किलेडर ई रे सिर कानी अम हाथ कियोडो, जीवतां पाळा अघ घडी ही कदेई निठ फेरी हुवली, अवार मरघोड रें हाथ मे मोरखो, अर भाग रामायण-ठगोरा री लीला रचना देख'र, बीनै एक चढ अर एक ऊतर ही । बूकियां रें चनण, छाती अर सू डी कने चनण री गरी आंगळ्यां, जरूर कीं भागण री आंगळ्या मडी हसी बठै-सुलसीदास इयां बसता हसी अर भगवान राम रो अमे हाथ इया हीं घरीजतो हसी ई बणायोड मुरद रामदास जो पर, इस्त सू काई हुयो है बाळतां घी चनण अर सोपरा काई ठा किना चाईजसी, फेर समाधि रो चोकियो अर बीं पर पगलिया, जलम मरण तिथि अर बडाई रा उघडता ऊजळा भाक-ई न एक इतिहास रो सत बणा र छोडसी-काद रा कीडा ।

भडारो हसी, भेंटां चढसी जायोड में । र चादर ओडसी कीई, अण हो घोडो हसी कनेई किसीक फूठरी साम'र राखी है ? ई रो हो गिद्दी पर बँठघोडो, ई रो बाप ही नीसरसी कीई-ठाकुरजी ओटा'र भेजी बी चादर न घूडघाणी राव छाणी कर'र छोडती । काम अर दाम री मँलवाई सू सूपली कियोडी चादर ले र 'बाप कन जावण जोगी ही की हुवनी । लास पर लट्ट हयोडी दुनियां न कुण 'समभाव' लास डीवण सू हीं राजी है बा । छोडो, ई गई गाथा न काई छेडो है ई रो । फुभळा र बो उठ छडो हुयो, दीपारें स खालणो है आपां न घने सेठ र ।

दस साडी दस हुई हसी, जीम'र जियां ही छेड हुयो, टीकू मुनार क्या आवनी । बोली रो मीठो अर सभाव रो कीं मजाकियो है । लोग बीन गाव रो नारद क्या कर । गवाड गळी री खबरा र मोट कांकरा सू लगा'र घरा मांशली महीन सू महीन खबरा रा रावडिया बीरो जाणकारी री चालणी सू रोज निकळ । धो सुख है बीरो, बेच भावो भाव है-मुनाफो की आवनी । ई रो साईड

बिजनेस है ओ, मन नै छुराक देंवण, पेटे नै तो रोटी कमा'र ही पालै । बरस तीसेक रो है ।

“भाब टीकू” सिनाप बोह्यो ।

“आपोनी, दिनुगै सुणी क रात भाया थे ।”

“सुणा, गाव री कोई बात ।”

“बात ही है म्हार कने तो, धीर हू किसेी भागवत बाघ जाणू ? आज तो एक इसी सुणी है क, सुण'रे म्हारा तो कान सूस'र हाथ में भायग्या ।”

“इसी काई है, कीं सीध तो मने हीं कर ।”

“नव बजी आळी बस में भाया दोस, दो साधुडा है जवान सा, एक लुगाई है अघेरुती, छोरो है बरस बारे तेरेक रो भीं सागै । भां धागै रामद्वारे हू हीं जा लियो । लुगाई मने बा नायण लागी, जिक्की अठं भायोडी है भाग एष दो दफै । म्हारे सू को रह्योनी पूछ बिना, “ये तो चाईसा, रामजी र आसर अठं भायोडा हो नी पैला कदेई ?” बा बोली, “हाँ ।”

‘राम आसर बेखो, भाग' रो बात, थोडो सी कसर रई, मँतजी सू मुलाकात को हुई नी ।’

“ठा की मोडो हीं लाग्यो, जोग री बात है ओ !

“राम आसर कागद को पूग्यो हुसीनी ?”

कागद कुण देंवतो मने तो पाव रं ही एक जणै बवत सीध करी, कागद कपों को दियोनी, ई रो ही मन ठा है पाटवी खली जे चीजां तो ई नै बीन करेदी है, तो हू देखलेसू बीन, तीब तीब रो मन ठा है, म्हारो ही भाव पेमा है घणा पापड पोया है मँ, नास्या में सु नहीं कडाय लू तो म्हारो नाव फोर देया ।”

‘राम आसर चाई सा, अठं पणो देख रेख तो चांदा चाई री समझो ।’

“हा हा म्हार सू किसी छानी है चांदा चाई थारी । मोडो बणी गवा री गोदाबरी छानों म्हार सू सेठ ही को है नी ।”

हू दो मिठ ताई बीर चर कानी देखतो रैयो, चांस्यां घर हूठी पर जाणु लिह्योडो हुव पल लम्बर री गाघ घर रमार ।’ मँ टोरी बात नै भळै,

"तो राम भासर बाईसा, गादी तो बाँरो कोई चेलो बैठसी, मासमत्ता री छाण-
बीण तो बो ही करसी ।"

घोडी जोस में धार बोलो, 'गादी बैठसी, देख्या भगतजी भो,' बी
छोरे पर हाय राख'र कयो ।

"राम भासर भा कियो बाईसा ?"

"बाँरो ही है भो, भर हूँ बाँरे भर सू हूँ ।"

"राम भासर ब तो सत हा नी बाईसा ?"

"घरबारी किसा सन्त को हुवैनी, बेद हा बी तो, कमावता भर भजम
करता कमाणों छोटी काम घोडो ही है ?"

राम भासर बाईसा, बाँ भाप ही तो घठ धार चादर घोडी ही, राम
सरूप जी री पैतीस चाळीस बगस पला ।

"बै धारा काका लागता ।"

"तो राम भासर भो एक ही डावडको हुयो धारें ?"

"छोरी एक धोर है, बा परणायोडी है—नागौर मू डवे, छोरो भर जवाई
दो च्यार दिना म ठूकण घाळा है ।"

"राम भासर धोर टावर बाँरे को हुयानी ?"

"दस इग्यार साल हुया । बा भापरी विरति बदळी ही, जगत सू
वेराग हुयो हो बाँन ।"

"तो राम भासर बाईसा भो डावडको ही चादर घोड'र धागी जावतो
घर, घसा लेसी-तो ?"

"ई रो तो भो जाण पला हीं काई ठा, जोग नहीं पळसी भगल सू तो
धोई की न कीं करसी ही ।"

"राम भासर जे ई न चादर नहीं घोडाईजी तो बाईसा ?"

"तो हूँ घठ भूख हूडताळ कर'र देह त्याग देख्यु पण को घोडावैनी कींरी मा
हसी सू ठ खाई है ?"

"राम भासर बाईसा, लखदाद है धारै मात पिता न भर मालक मैतजी
नि भापरो दिठ नचो देख'र भाप पर म्हारी बडो सरघा हुगी भापर पर्गा री

रज है सिर पर राखणी चाऊ -म्हारो मत पढ़ती है भापरो मदत पूरी करस्युं
 बाबटी राजी हुई एक हलकी मुल्कान बीरि होठी पर खेस'र भयमित में पाछी ह
 बिलाईबगी ।"

"तैं तो टीकू, पाणुदार नैं हीं मात करदिया ब्यान लेंबण में ब
 साधु को हो नी बठै" सिनाय पूछयो ।

'हा बपोनी, सुणै हा म्हारी बातें ध्यान स्र अर रह रह देने हा-म्हा
 मू ड सामी । सोच'ग हवला क गांव में सायत सगळीं स्र भातबर घादमी ओ ह
 हुवलो । ह सठो हुग्यो एक जणों म्हार सार रो सार बार भायो, बोल्पो, 'मगत
 चादर रा असली इषकारी मांय बठा बँ सत है, हँ तों साय भायो है, भा र
 ठगोरी, पता हीं घठ स्र बदेई दो ब्यार ह्यार रो डेरो ले'र लम्बी हुई, जि
 भाज पाछी पवारी है, इयां कर करा'र भा भळ की भाडो देठ है । भाज
 पणुसरो धार धण रामदासजी जिअ काछर रोग्या नैं हीं दी हँ । में कया
 भासरै भाप ठोक फरमायो स'तां, धर हँ ठुरग्यो घर बानी ।"

"तो टीकू ई रो मुतळब है ओ खाटो रेत मे रळसी दीस ।"

"सगळो नही तो, लवखण देखतां, नारळी दो नारळी तो जरूर हीं

'रळन द, ई रामद्वारै रो पाइयो, इस ही गुळ में लाग्योडो है ।"

टीकू बोल्पो, 'ये पाइय री बात करी जद एक बात याद भायगी मने

'काई, कह नांख या कयो चुकै ?"

म्हारो दादो क्या करता, ई रामदास रो दादा गुरु बडो टोटकब
 धर इद्रजाळी हो । पलापल बो ही भायो हो घठै । जवान सी एक चौधरण
 भाया करती कदे कवेई रामद्वारै । रूप रंग री भलेरी सरळ धर सतोमत भाळी
 ही लुगाई । एक दिन मोडै रो मन सागी को रयोनी दरखण कर'र पाछी जाब ही
 बाब बीन एक पतासो दियो बोल्पो 'रामजी भासर परसाद है ललिए घरे जा'र ।
 भाई रो त दूरो रामनेजी बजाव पतासो भाग रो थळी पर पड'र फूटग्यो ।
 चौधरण सोच्यो पतासो तो घशों हीं परसाद रो है, पण पगां मे आयोडो कियां
 साऊं, बण सँ भोरा भेळा कर र भस रे चाट में नांख दिया । भेस सिदिया जिया
 हीं खाटो खायो धर रिडकणी सुरू हुगी । चौधरी भायो बण देखी भेंस न रिड
 कती समझ में को धाईनी बात सुवावडी भस है पाळै में भावण रो तो सवाल

ही कटें । की दियो लियो भंस नें तो ही बा तो बिया हीं बर । बण खोलती बीन
 छूट सू एकर, कदास यमै तो, पण, खोलती हीं बा तो दीने भर जा'र रामद्वार
 री साल् भाग ऊभयो । क्रिया हीं पाछी लायो बो धीन, सारीन धाल'र किवाडी
 घोडाहदी पाछी ही, पण बा तो भले बिया ही करै, ताफडा तोडे । जाट
 स्थानो हो समभयो की न कीं दाळ मे काळो जरूर है । घर म पूछयो, "भंस नें
 काई दियो भाज त ?"

तुगाई बोली दियो काई हो चाटो दियो हो ।"

१) "साग खीर कीं तो की दियो हो नो ?"

१) "नहीं तो" चौघरण बोली । भरै कीं दियो हुसी, सावळ चेत कर', जाट
 करतर डेर कयो । बा बोली, 'एक फूटघोडे पतासै रा मोरा तो दिया ही हा ।"

'पतासो कठ सू आयो,' जाट भले पूछयो । बा बोली, 'साल् भाळ' बावै
 सख्ये मन क खालिए तू, बो म्हारे हाप सू पड'र पूटयो मे उठा'र बाट
 स दियो । चौघरी समभयो, बण भले खोलदी भस न, अर भस भले सीधी
 साल् भाग जा ऊभी । चौघरी बावै न हेले कियो, 'सस्ता बारै पघारो ।' मोडो
 प सूतो ही बोल्यो, 'कुण हुसी ?' चौघरी कयो 'बीनणीगा ऊभा है बार, माय
 ण नें सिर फोड, भा'र बगी बघारो ई न । बाबा बार आयो चौघरी
 दो यो फाल र कीं मचकायो घर का चिमठाया । बाव्यो इयां पतासा बाटता
 त्राक दिन हुस्या ?' मोडो पना पडयो बो, बोल्यो गौरी गाय हू, मैं भस रै कीं बो
 योनी पण भा झाडी धाल हू । भस सावळ हुगी जद बो ले'र घरे भायग्यो ।
 बाव छोड नियो बीं दिन सू पतासो देणों भर चौघरण छोड दियो रामद्वार जाणो ।

१) १) सिनाथ गुण हो, टीकूरी बात कोई टावर नानी री बात सुणतो हुवै
 ज्यु । बोल्यो, माईडा भा तो साव गोडा पर घडघोडी सी लाग ।'

"हुवसी, मैं तो दाद कन सू सुणी, भर ब कूड कयो बोल हा, मैं तो
 भावो भाव बची है, खाद रो मुनाफो ही को कमायोनी ।'

"बात खर किसी ही हुवो, बासना रो दास घाप'र माडो हुवै भर जिक
 मे मळ, साधु रो बानो । प्रसली प्रभूत तो समभल दसा घादयो ही हुवै ।"

१) १) टीकू बोल्यो 'तो ल जाऊ भव टम हुगी पेट नें माडो देऊ की ?'

१) १) "तीक," टीकू, टुरग्यो भर सिनाथ दो मिट एकर घाडो हुग्यो ।



"सिनाथ ?" मा बोली ।

"बोल ।"

"हजारीमल सू अजवाण मगाई ही रे रिपिये री खुणचे'क मसा हुवेली । हे जिकी घोळी, पण, हुव या कीं उगसर तो हुवनी, देख तो सरी कोरी सात हे पळटा'र ला, कां भापणों रिपियो पाछो लिया ।"

'सावळ मिल तो घनजी रे घठें सू सायदू ?'

"याल करसो, कांकरी कर'र देऊ बीनणी न घोडी ।"

सिनाथ अजवाण नें हाथ में ले'र देखी, सू पो कीं, पर पुढीके रा पाछा ही भूठ बंद कर दिया हा जिया हीं ।

"ई न तो मा कोई घरम री ही को लेंनी," कवतो बो टुरग्यो ।

कीं भाग जा'र राजू मेघवाळ पर बीरी छोरी बरस चवध-पद्रक री साथे हुग्या । सिनाथ पूजयो "कोटवाळ कींनें दोरो कर लियो ?"

"माईलां हजारीमल र जाऊ ।"

कयो ?"

"छोरी दो स्तारिया ठूठिया लेजा'र नाख्या, मण सू च्यार ठूठिया बेसी ही हुणा चाईज भुच्छेरेक घो गुड दियो हे काळियो भर भाख्यां म घाल जितो भा चाय री पुडी-एक आदमी री ही को बणुनी सावळ बूड बोसू, तो देतो ये" कह'र बणु चाय पर गुड दोनु ही सिनाथ सामा कर दिया । सिनाथ बोल्यो, हू ही बठ ही चालू, भापा बात करीं सेठ सू, भई इयां कठब दी कियां तो जीणो ही को हुवनी ।"

ई गळा में च्यार घर हे च्यार ही भोसवाळ है । गळी काद सू भरी है किचाण भाव । कादे में हर मूग पोतडिया रो पाणी खलारा, कागदा रा टुकडा भर कठे बठ ही कुत्ता रो मळ मूत-निकळत भादमी रो भाख्या उघाइन न ही जी को करनी ।

‘रानू सावळ घाए, पग भरीजलो, का, कादें में पढेंलो कठे ही उबळी

‘ज’र ।”

बो बोल्यो, “घरं में भाईता, नळ काई लाग्या, कादो ही कादो हुग्यो
केई भाग्या तो ।”

सिनाथ बोल्यो, ‘आ लोगा घम रो जावतो तो इसो कर राख्यो
हैं क मू रो बाफ सू ही जी को मरण देनी घर ई कादें में घणगिण भाधर घर
सट्टा किलबिल, इतो कादो नहीं कर तो काई बिगडे घररो, पण जागता न कियो
जगईजे ? दो माया हुवे बो मोरघावरो करे आ सागे ।”

‘रत बिरत तो मोईता’ अठकर चालणों ही पाप है, पण मोट भिनखा
नै कवता ही तो सका घर नही कवो तो निभाव मुक्कल, पग जावें परो गारें में
तो कोई लोटो पाणों ही को नाखनी भला ही गळो फाड घायो ।”

‘गळो क्यो फाडें, रेत मसळलो पगा रें ।”

‘पण भाईता ई गळी में तो सूकी रेत ही हाथ घायो भोली है ।”

‘आ ही साची कदें स,” अर बाता बार्ता में हाट आयगी । सेठ बरामदे
रे एक खूण में बडा है । ऊनी भासण घर कन छोटी सो एक भोषो पड्यो है,
भाग एक रेत मडो मेल राखी है । मूहें पर मूमती घर खेल अघ उघाडो ।
बरामदे री चिपनी ही उतराय पास एक कुळबककी है । छोटी जात घणसरी
गाव रो हुवो चावें बारली, दाणा अठें सू ही लेव, घर कन रू कने, अठें ही
पोसणा नाखद, बीमास में तो रिपिय में साडी प दाना गाव, अठ ही डूक, घर
रो चाक्या च्यार महोना उवास्या ही लेवें अर लुगाया घणखरा, एकर की सास
सोरो । किरकिर तो रीर कदेई खाणी, हीं पड, खाटी अर याची री, परवा ही
अवार कीन हैं केसर सी पीळी दिपोडी बाजरी री रोटो सावळी, हुवे तो हुवो
देसी दहासी सरवती अठ भावता ही कल्याण वण तो बणो, सोरो मास लेवण में
अ बाता सां हुसी । बरामदे रें हावें पास एक आदमी भावें जिती दरजी री,
दुकान है । अ तोनू हीं सेठा रीं घरू है । चक्की पर घापरो पोतो बठ अर दरजी
री दूकान रो भाडो भावें—सागे घर रें पूरा रो खोटवों मुफ्त में ।

सिनाथ अर राजू दूकान में बहया । सेठ रो बेटो गुयमल अर एक पोतो
बरस पदक रो तोला जोख में लाग्योडा हा । दूकान रो एक बारणो खुल चार-
भावण जावण न । पिछोकडो सासो लम्बो चौडो है । लिडक है लोह री—टक भावें
जिती । अवार बारणो खुलो हो है । सिनाथ वीन गौर सू देही हो । लकडया

घर ठूठियाँ रो एक ठूठो दिन सामोरो हो—बी बन ही दूबो घोर मुन् हुव हो ।
 एक पसवाइ एक ठूठ सामोरो दीग ही । पानसुँ में केई बाट घर केई भाठा घर
 रागा हा । घाँठ दग मुगायाँ बठी हो—गाती गारिया नियाँ ठूठिया ठोन्या है
 'घवार ही बी—गदना नै जडीके है—वेर बोई तो ते ते'नी दूबान मू ।

नयमल बोत्यो "घावो सिनायराम घाणो किनाँ बाई हयो ?

घाणयो इयाँ ही, नाम बात बी नी पसाँ मुगायाँ न सल्टावो ये घाणो
 पसे करत रस्या ।"

मुगायाँ मायक घर मपवाळां रे घर री ही । दो एक बी में पेट सुई
 दीगी । पैसाँ दो घ्यार मिट ऊभी रही वेर एक पसवाइ यठयी । ठूठिया दो पूनी
 दो गिपियाँ मग तोल्या है—आँ घठे । घर रो बडो छोटी बोई सोद'र भेळा कर'
 रोही में एक जायाँ घेँ वेर घाण घाणर मूय सारू खारियाँ पर बडी घतराई मू
 घिण'र—डोड दो बोस मू मू घठे घाव । माय माय केई मुगायाँ तो तीन तीस
 बीसो मू बेसी ऊब'र सार्व । एक एक घर में दो दो तीन तीन साँवण घाळी हुवे
 तो घाँटे रा पइसा स्सोरु घर सावळ हुवे । बो'वाळाँ री परणीपाती एक छोरी
 बोली, 'सेठाँ, हमें भाई री बह उँतावळ करेँ, छोरो नाहों हे, एकसो ही छोड र
 भाई है, जा र घु घाणों है ।

नयमल बोत्यो सवूरी राखो, इयाँ कठ ही भाग'र घोडा ही जाँवा ।"

दूसरी एक बोली, घोडो सो तिरावणो कर'र घर छोडघो हो सूरज
 ऊयाँ मू पसाँ, तीघो (रतोई) तो जा'र घब करस्पू, बाजरी सेणी ही मन तो
 पण घब लेग्योडी कद ठो पोसीजी घर बद बा पोईजी, घाटो ही लेस्पू कळघक्की
 मू "

छोरी बोली, 'घाँटे में केई दफँ कोरी किरकिर घाव घाव'र लिन भाभी,
 घरे दो लप दाळ हुव तो खोचडो ही ऊरलिए, लेग्योडेँ घाँट न पाछो कुण लेवलो ।'

छारी री बात मू ठाँ लाग हो क भा बडवी घोट बीँ सारुँ कदेई
 घाँपोडी है ।

एक और बोली, 'नयमल जी, रात रो कुडखी दो एक दळियो नाख्यो
 पेट में, बा पाण तो रोहो पूगी जितेँ ऊतरगी, घब तो बाया पडेँ है मरती री ।'

"भोजू तो मैं ही बीँ को लियोनी चाय छोड'र बापूजी रे तो तेलेो है
 कठेँ तो घाँन हीँ देल ।"

सिनाय पुछघो, 'तीन दिन को जीमनी ब ?' ।

“खाली पाको पाखी पी’सी ।”

“घारलो काम तकडबद है ।”

कोटवाळ बोल्यो, “रोटी तो नयमलजी, काम माग, बा पेट मे नही हुवं तो काम ही को हुवंनी, घर काम नही हुवं जद अरोगा काई ?”

जवान सी एक लुगाई बोली, “बेलो तेलो म्हे ही घणा ही करता पण छोरां नै खु पावां काई, घांता में कीं हुवं जद ही तो घर बापरै-ठूठ में थोडी निकळ बा ।”

एक और बोली- मरता मू कितक दिन ठूठिया खुं खोद’र वतावो देखा ।”

नयमल बोल्यो, “तो घम इयां सोरै सास थोडो ही पळ ?”

सिनाथ घांरी बात ध्यान मू सुणु हो । बीरी नास्या मू, कादें री बास सोजू, सावळ को निकळीनी, बो बोल्यो, “सोरै सास तो कादो हुवं, लवकडफाड मनत को हुवंनी, घम किस में पळ घर किस मे नहीं, म्हारे कीं समझ में भाईनी ?”

“घम खाड री घर है ओ, हरेक रै बस री थोडी ही है ?” नयमल बोल्यो । सिनाथ बोल्यो, “सिंठा ठूठिया में खोद, जीव तो कीं न कीं मरता ही है ला ।”

“हां, ई में कणों हो काई ?”

“पण जीव घर ठूठिया साग ही जल्म, बांनै खोद’र काडपां तो ब मरसी ही, घर खोद्या बिना, ठूठिया निकळन मू रया, तो पापी तो हुणो ही पड़े ।”

या हू म्हारै मूठ मू को भाखु नी ।”

“खैर मत भाखो, पण घां ठूठिया री कमाई तो खाती भळो बे ही खावो, कमाई सारू कीं पाप तो घारै ही पांती भावंतो है तो ।”

राजू बोल्यो, “सिनाथराम, घांरी होड हुवं म बापटा मेवं रा रुख है, मज’र घाया है कीं दान पुन करे, अथबे भूखे तिसीं नै ही पोखे, धाण रै सिपाई मू से’र पटवारी, गांव सेवक घर अलकार न घापरी पोटी सारू धिबटी घूण नाखे है, सतावता ही रवे भा न ब ।”

सिनाथ कीं हठ’र बोल्यो, “तू कोटवाळ है, म बातां ऊडी है, तू बात करै है खेळीं कन ऊमो ।”

सिनाथ बात पूरी खतम ही को करीनी, कोटवाळा री छोरी बोली, “सिनाथ बडा, ये घांरी कूड़ी कप न रेंगदो, म्हे को ‘समझानी, म्हानै चुकणुदो

पैलां, भरती मरां म्हे, घरे टींगर यारा बूकें, करता रया ये घारी पछ, घणी ही टम है ।”

नयमन बोल्यो, “रतू ल पूगी दो रिपिया, रुसडी भँ दो तू, एक एक भारकी थार छोरां री ही भायगी है साग ।”

रतू बोली, ‘रुसडी नं दो घर मनें पूणी दो कियां सेठां, म्हारो सारियो ही, लू ठो है घर भार ही दो ठू ठिया बेसी बीसू हू साई ।”

“घारां मे भाल कीं जादा हुवैसी, च्यारानी बाद देदी हुवली, हू तो लिह्योडा देठ ,”

‘एक ही जाग्यां तू ऊंचाया है म्हे इयां घिगाएँ घाँस्यां मिचवा’र घाँधेरो क्या करो ।’

‘छोर, घारा पइसा ई रं, घर ई रा घारें घस दिया है सा भँ दस पइसा भौर ल तू राजी रह ताकडी री काँण घडे मे काडस्यां भळे कदेई ।”

‘च्यार ठू ठिया सारें रयग्या जद थे कयो, ल नाँख नाँख, तोल्योडा ही है घान भवै, भळे ही पद्द पइसा तो कम दे दिया मनें, कह र छोरी कळचक्की काँनी गई परी । घणखरो बां मे घाटो खेवण घाळी ही सागी । केया चाय घर गुठ ही लियो ।

नयमन बोल्यो, “क्यारा कभाणा है घो, बँठो सूतो बाणियो ई घड रो घान बाँ घड में घाल, ठाली बठो कींन घावड़, पूरो भिखत करणी पढ़ें घां लोगां साग, जद जा’र कठें ही च्यार छवाना मण री मजूरी मसां बँठें हाँ भव ये फरमावो ?”

इत्तैन बामणा रो एक छोरो घायो बरस पद्द सोळ क रो, बोल्यो ‘सेठां, नित्र रिपिया मगाव पटवारी जी ।” देदिया सेठ बीन, गयो बो ।

सिनाय घापरी अजवाण दिखार कयो, ‘देखो देखां ई न, ई री तो म्हारो समझ मे रोजीन चौदल खुराक दियां हीं की फायदो हुवनी, घांगळो है भा तो ।’

एकर देखी सेठ बीन, फर छोर न पूछयो “कण दी रे भा ?”

‘ठा नी ।”

ठा नही तो कोई बारलो तोल्यो मिनख तो कीं देखा करो । सेठ बीने पाछो ही एक डालडा र एक उबिये में घालदी घर बीर बरोबर सा’र, घाछो

तोलदी । सिनाथ बोल्यो, "ई राजिये रो दुलदद ही सुण्या बी, ओही रीरीं करे दीस ।' सेठ सिनाथ सू की सकगयो, मनमें तो छँर गाळ ही काळतो हुसी । राजू री बात सुण'र, सेठ बोल्यो 'भई मन ठा नी, कियां काई देईज्यो है सोदो तन, चिबटी चाय घोर ल अर भाल ल घोखोडें गुड री डळी ऊपर, बेटे री मा खावें जिसो है गुड भो, म्हारो कोटवाळ है तू काई याद राखसी, म्हार तो भाघोनें घाडा तू हीं भावें, दो पइसा कमाई करण न घोर घोडा है ।"

"हू जिसो हाजर हू सेठा ।"

"जावतो जावतो लकडल्यां तो वेई दाडू पर नासद ।"

"जाळ सा, भा बाई भा ए," कह'र बो बारणुं मांवर लारी नं गयो परो सिनाथ सोचें हो, "रोय लियो भो तो, भा डळो घर चाय ई रें मू घा पडसी, भाख्या मू गी हुज्यासी, कम सू कम घटा डोड घटा सू कम हो लागनी दोना न । मजुरा पर मुलायजो—किसोके भेळ बँठायो है सेठ, पण काई हुब भकल बिना ऊँठ चवाणा फिर—काम करतें न भापा किया बरभा ?"

सिनाथ उठयो । डाव हाथ कानी भलमारी र ऊपरले पासै नौकार री एक फोटू ही, बो देखण लाग्यो बीन । सेठ बोल्यो 'पुरो महीनो हीं को हुयोनी, अवार हो टागी है ई न ।"

"हाँ जद ही, पलां तो को ही नो ।"

दुकान छोड'र बो बारै भायग्यो बरामदे में । नथमल दुकान रो मांयलो पू टो दे'र पिछोक्ड कानी गयो परो । अब सेठ हजारीमल जी को हा नी समाई पर, घर में चठग्या हुसी, खूण में पावली सो एक कुत्तो—काद में लपपब हुयोडो सूतो हो मचीतो ।

सिनाथ बरामद र पगोघिया कन ऊभग्यो दो मिट । सोचै हो एकर भळे ई बेतरणी न पार करो । फेर ध्यान भायो बीन, "देखो कोटवाळा रो छोरी बिना लाग लपेट र किसीक साची कई "धारी कूडो कय नं रणणे, प्हे को समझानी मरतो मरां, घरे टोंगर बूक, छोरी र होठा पर खटाई भायोडी ही,सूबयोडो मू डो, भाता री भूख भाख्यां में तिर ही, इयां ही बापडी दूसरी लुगायां हुसी—कई दो जीबां सेती, बारी भातां चूटीजती हुनी मांय री मांय, कियां रा नाहा टावर घरे बिबबिलाव—बोबां खातर पण बोबां में की हुगी तो, टकी मे कीं हुब तो टूटी में भाव, तो ही खालडो चुग्रासी काई ताळ । जामता ही रोगी, त्रामता ही भूखा

कारण पुण्य खोज ? टुकड़ों घबै करसी, धेत में कोई डोरु रो हुवसो, घपकाचो रोटिया, भाधी रास, पूरा सून-मिरच हा ही बठै, पाणी सागै गिट'र, काम करता करता सास गळ' में सिया, दिन रंडो लेती । अथभूसा, अथउघाडा अत कोई बेन तेस री बान समझाय, महिमा री महीन ब्याख्या भारै कठों में उतार, तो कियो उतरे वा अर कियो पच बांर । बाड, खाई, भू पडी अर हल-हास काई काई करणों पडै बाई ठा-बद कठेई अर रा दरसन हुवा हुसी-छोरी ठीक ही तो कैयो, रणसो कूडी कथ नै-म्हे को समझानी ।"

बरामर्द में सूत कुत्ती, अचाणुषक ही कान फडफड़ाया-सिनाय चमकयो, 'सातण स टूटग्या, धो अट देयसी टुरायो नही नही करता तो ही दस पांच छांटा काद रा परसाद में पांती आयहीग्या, सोच्यो सोळो तो घरे जा र निचोणो हीं पडसी । मूळ सू निकळणो बीरै, 'रोयलू रे कुमाणस तनै, कठै बठो ही म्हार भाय रो तु ।' बो कळषक्की कनकर निकळ हो । एक छारो जाव हो वामणां रो बरस पट्टै तोळ एक रो । आठवीं में पड-बो काध पर पाच छत्र कोला आटो माय जितो पीयो ऊच राख्यो हो । सिनाय बीन चालत ही पुछलियो "छोरा आज काल आटो घरे को पीसोनी रे ?

'पटवारी जी रो है ।'

'कितो है रे ?'

"पांच कीलो ।"

"कितना पइसा दिया रे-पांच कीलो रा ?"

"की नहीं ।"

"क्यो ?"

"कदेई को देवैनी, ग्राम सेवक ही को देनी-दोना रो हूँ ही लेजाया करु घणो दक ।"

"अर ततै ?"

'मन साबासी ! मोडो बणो जाऊँ तो, मास्टरा न सिपारस करद म्हारी ।'

सिनाय काई जेज बीर साय सागै चालतो रयो । सोच हो जद श्री पिछाई दे'र 'याल नहीं कर तो सिरपच अर सेकेट्री इसा दातार कठ सू भायां, ब ती

बडां सू पला तेल पीठणियां है । छोखो सेठ ने इसो सोरो घर सस्तो शिकार कठे
 माघसी, च्यारी रा ही घण सू घणा पाच रिपिया हुता हुसी महीने रा रिपिये
 सवा रिपिये में एक आदमी, इती मस्त में तो खरगोस ही को मरनी, सखदाद
 मिलणो चाईन नधमल नै ।

तिनाथ भळे पूछधो—“पटवारी जो कठ है रे प्रवार ?”

“वचायत भवन में ।”

“काई करै है रे ?”

“फाटक में प्रवार केई दानरा लिलाम हुया, बांरो कोई हिसाब करता
 हुवला ।”

घोर कुण कुण है बठ ?”

“सिरपच, पटवारी ग्रामसेवक घर सेकेटो सगळा ही है ।”

‘तन ठा है, काई लिलाम हुयो प्रवार ?’

“एक टोपडो, एक गाय ही, साठ हो बूडो सी एक ।”

“टोपडो बण सी, ध्यान है की ?”

“बोली तो प्रलिय काटवाळ लगाई साठ रिपियां में, पण सेईजी वा
 हजारिमल भी वास्त है ।”

छोरो फटयो एक गळी में । तिन्याथ न ध्यान आयो, छोरो साचो है,
 प्रवार थोडा ताळ पीला निब्व रिपिया एक छोरो ले'र गयो हो सेठ सू । पटवारी घर
 सेकेटो र एक दाफ री बोतल, बाकी मे सिरपच, ग्रामसेवक घर दो च्यार रिपिया
 काटवाळ न । टोपडो निरवाळी सेठ रै चरे पूगणी । भोळो कोटवाळ राजू कंधतो हो,
 ‘घ मेवै रा रुख है, पटवारी घर गावसेवक काई ठा कित्तो नै घ' पोही ।’ बीन
 काईंठा दूध कींगो ही है, बिलोईजसी कठे ही जा'र, पसेय कीरो ही पडसी, घर
 सोनो जा'र बठे ही चमकसी ।

बोने टोपडो रो ध्यान आयो, फाटक में बण देखी है बीन कई दफ ।
 निघण, तीन सवानीन बरस रो, सूधी घर फूठरो बेलो । साखीज्योड़ी हुणो चाईजे,
 पांच साठ महीना में ब्यायगी तो कम सू कम दो हजार री गाय हुमी-मंडत देखती
 दो हजार में ही कुण बेवे । पांच बीलो दूध तो पलाण रै ही हुणो चाईजे घरम करम
 पाळो दू'सो कोई पण छोरी साण ठीक कवती ही, ‘खोडो कूडी कब नै, मरती मरी

म्हैं। पेट में नाखण न घाटो चाईज पैसा, हील दकण न मोटो पतलो पांच-सात हाथ पूर घर सिर घुसोवण ने च्यार हाथ फातरो, घरम बरम रो नाव पछु लेयो ता वी समझ मे भावें।

पर प्रायग्यो हा, 'भरे भजवाण तो भलाऊ मा नै।' बीन ध्यान प्रायो घर बो मांय बढ़ग्यो फुरती सू।



अध्याय १ धनजी सेठ री दूकान है—पक्की घर लम्बी चौड़ी। अठ लूण तेन समाखू सू ले'र मोती मू गिया घर रातदिन र कपड़े ताई—जरूरत भाळो स चीजी साथ। घणी में तो बाई लिपस्टिक अर नख-पानिस री दो च्यार सीमी तक, सामनी बलमारी न ठाई साथसी—सेवा बान मनः हीं नायक मगी घर भेषवाळा री छोरी छींपरपा का वारी चलती चटखतो जवान बीनण्यां हीं। ई सू धान बाई, घोर तो पांच पइसा मजूरी हुणी चाईजै—बीन मरो पाव बीनपी, धामण ने तो टक्के सू मुनळव है।

दूकान प्राग परपर र गोळ समी पर बडो बरामरो है घर ईं र विपती ही सोह री मोटो सिढक-सिढक में प्रागीन घर है प्राज सू बाईस तेईस साल पैसां घर री जाग्यां पर मूनवाड ही, अयेरी रात न कोपरपां बीनती तो डर सागतो घर दिन में आत्मी री जी समूबतो। एक घोसरो खेजको घर एक बूडो जाळ हा ईं में—बाईं बाळजां में गोह घर कोपरपां घर सरीर पर पंखेरु घर संत मास्यां रा छत्ता हुवा करता। दूकान री जाग्यां हुंती कडाईं घाळो एक बन्धी साळ। बीमें सागती सेठ री दूकान। प्राधी में दूकान घर प्राधी में सोवा उठो। निमधी निमधी एक चिमनी जग्गा करती रत री दस बडी ताईं, बींर घानरां सेठ दिन भर री पोत बाकी मांडतो मिलावतो।

प्राज लिछनी री मर है। बीं मागन मूनवाड में हुसतो मुळकरो एक घर दीपे—मू भारियां पर उठयोडो। बाडा, घेन घर माठी बीनी दो मुग्गा। दो पुनी दो बरस हुवा है एक टुकर नलियो हाठी री मुव ईं में नाडी कांी अत्रईं घर घगाड सावण म ईं ने पनीनें कमाई री काई चीजे परसा लियो गोग तारं तारं दिरं। लपन रकम तो प्राज ताईं जू ही पूरी करली, प्राई मुनागो हो मुनागो है। साज छर महीनां में एक टुक सेंवण री ओर छोचे।

पीणोंघारो लूटो, घाड में कृतर री मसीन, गांव रो ही नहो आस पास रै केई बासा री घणखरी कचरो अठे ही बट । एक हाळी भर एक थोटा घापण आळी घरे काम करे, लोल जोखी खातर दूकान में, एक छोरो धीर है ।

दो भाई है—बारे टावर टीगर दो तीन पड़ बीकानेर में । बघतो परवार घर बघतो ही बीपार । भाई दोनू ही पइसा पैदा करण री मसीन है—लक्कड सू फाटल । रोही में बठा हुवे तो ही चित पुट करे कमाई करल—मिनख मिलणो चाईज प्रांन । गांव में घावे भलकार री आसू मिल्या बिना, समभलो जात ही को पळनी । साख भाछी भर कमाई में भल्ला पट्टा । ठाकुरजी रो मिश्र कर राख्दो है गाव में, पिडत रामधन सेवा करे ठाकुरजी री, भर अधपूण घटा दूकान ही घाव गोपाळ सहज नाम' बाचणन ।

धवार ग्यारे साढो ग्यारे बत्री हुसी जिनरी । धनो सेठ गिद्दी पर बैठो है । मीतजी रो सास नै सावळ एहे सगा'र दूकान बस खोली ही है । बघती चांद, चिनकतो चरमो भर चनण रो गोळ टीको—सदे परमारथ रो पूतळो लागै । रुद्राक्ष री महीन माळा धीर राख परणन कण ही साधु भला राखी है क ईसू ब्लडप्रेसर को हुवनी । सेठ बरस पचास ता ले ही लिया च्यार छव महीना करर भला हीं हुवो । सामी गिल्ल री पेटो मल राखी है । गिरधारी बापणा रो छोरो, बरस बीस चाईस रो सोला ओसो कर अर सेठ गाहना नै पूछ पूछ हिसाब सारू पइसा लेव देव । अवार जान सू बलम उठार'र बही में लोकां खींचे—निजर गढो'र बही सावधानी सू । जरूरत मुजब च्यार आळी माठ'र कलम कान पर पाछी हो इ यो टांगनी जाणु कान बीरो बलम स्टण्ड हुव । सामो देख्यो तो बीने करणो नाई घोबनी दीख्यो । दूकान में पग राखता हीं सेठ बोख्यो, 'घाव नेवगी, बियो घाणो हुयो ?

'घायो तो पगां पगां है, वण धार करे धे जाणों सीधे पगां कुण घाली ?'

'बोल तो सरो की ?'

'रिपिया चाईजनी हजार बारेंग ।'

साधे ही इत्ता, इत्ता रिपिया तो बरु में लार्थ कठ ह्ये, तो ही इत्ती काई जरूरत पड़गी धवार ?'

'भूरो बरु तो ये ही हो, छोरे रो ग्वाव मडायो ।'

'धवार बीमारें में बिना कठ हो ?'

“सोचो तो भा, ही कं, असक ठाकुरजी जमानो कियो तो उनाळ की ससवो हु छोरं री ठा ठप उरळं काळज बरस्या पणु सेठां, नर चीती नही होव है, हर चीती तत्काळ, बिना तेवडी ही भा पडी खरच री खाड, ईरो काई उपाव ? छोरं रो दादी सुसरो चालतो रंयो—सग्नो खुदाखुद आयग्यो, ठोडी र हाथ लगा'र बोल्यो, मालका म्हाने तो कूकू किया देणी है, घर धारो मैंगे रो पान हीं को खरचाणीनीं, बाप जांबत जांबत जी री कहू दरसाई क यात गगार भेळी ही म्हारी पोती पैमली न हरखे कोडे घोरिप चाड देया, बतावो बांरो कयो अबे किया लोपा, म्हारी बिरादरी में सेठा इस भीक किया देवण रो म्हातम की जादा है ।”

फेरतो करणो ही पडसी पण चोखो'क, इयां अणचींती लिछमी धाई भाछी सामु रा पण दाबसी भर तन पुरससी कंबळा कंबळा फलका भागी है तु ।”

हां टम तो अबार पण दाबण भर पलका पुरसण भाळी ही है । पुरससी बापडी धां जिता भाग्यां न कोई—मल धरां री हुसी वा म्हान तो बूई बार कूटसी नहीं तो ही म्हे सो फलका बर ही मानस्य ।”

हां ठा बोल किया देणा रिपिया ?”

‘माठ है माठ दस बोरी ।’

‘सळिया है ?’

एकदम, न कांकोरो घर न हू लळी ।”

“पणां महीन भर कोरडू ही नहीं हुणा धाईजै ।”

“काई बात करो सेठां, सुरकणी रं कायोर्द में फिण्टको निबळ पोत पडो है दाणो टाणो गिण सेया दहा है ज्यू है ।”

“भाव बोल ?’

‘दाई सू पेट छानो है ? कियो बजार भाव सवा रिपियं मुण्यो है ।’

‘एक गिपिय पद्र पहसा में सेला करल, अबार ही तुववाळू,” कह'र बीर चीर सामा एकर सावळ जोयो । सोक्यो, दू पो साग्यो है अद भाईको ईने पायो है लिछनीजी भेग्नो है फनेड सावण न, सो देणु धाईने धापां नै धावणी ऊरवा म रु जचा'र । प्रगट में बोल्यो, बांर तेरे कोस सेजासी बीरो भाडो, पांगे पाइत चू गो, बिन्नी घर मडो टैकत घर काई ठा बिती रकम रो जाळ, उळमे

पक्ष सोरें सास तिकटनी हीं भोखी, न खावण पीवण री मुख मुध भर न र्हावण निवटण रो मुख, दो दिन रो थारा खोटीपो गयो भस री पूछ में । समझदार तो सह्र रो नांव ही को लती, फोडा देखण रो कोड हूबै, जद वामण न ही मत पूछ, दुग्ज्या अवार ही प्राया पछ म्हार मू राम राम कर लिए ।”

। सेठ रो बात मुण र स्ववास जी डोला हुया । घोडी चाईज बनोर न, धरतो लेजाए, कद सह्र रयो, अर कद घा'र साभा सु भी वरीजी-वन देटी न ही साणी है । बोल्बो 'सेठा देखल थि ही अचै हू देखसू धी दुळपो तो ही मू गा में पण कीं लाड ती म्हारी ही राखी ।”

‘इया म्हान किसो रामजी न जी को देखों नी । भाव मू वेभाव थोडो ही पाससू ?”

“तो ही काना मे तो घालो कीं ?”

“दिल सवण री खी में तो म्हार ही रिपिय कीसो घर थारी जाग्या जे दूजो हुतो तो हू लेंवतो ही, पण थार खातर पाच पइसा ऊपर है, खाली कर घर पइसा ल हायो हाय, समझल मुगन चिडी तू ता जीवण ले र ही प्रायो है ।”

“तो हू लाऊ हू फेर” कह'र वा गयो । सठ उठ'र बरामद कानी प्रायो तो धार्य एक चुगाई भोढणती में भेळी हुयोडी पढी ही कन जवान सी एक छोरी बठी ही । खीनजर हुंवा ही, सेठ पूछपो ‘बपो वाला किमा घाई है ?’

धीं जवाज मुणती हीं भोढणी सावळ कर'र एक डाकरडा उठी । डोस र सळ ही सळ गाघरिये र पांच सात जाग्या गांठी लगायोडी । थोडी थोड़ी पूज । सेठ पूछपो बोलो माजी ?”

गूवटो कीं सावळ करती बोली होळ होळ, 'सेठा छोरी सासरं जाती पांवणो प्रायोडा बठा है घरे, की ओढणिय रो पूर तो सिर पर नाख र भेजू ज' ही हुब, म्हार बन तो काई हो, थापडी कीला पांचेक गूद लाई ही बावळिया रं सासर मू भोल धान-भेळो कर करा र किमा ही । जावती पूर पत्तो करलेजासी सुराज है थापडी म्हारी ही सोमा साज दे'सी ।'रुक्मिणी एक'र म्हारी प्रावण लाग्यं फेर बोली “कण हीं गांवर गयोडा है ये कणसर लगाय पइसडा कीं, प्रायो घ-भजाण बरोबर है हू तो कीं समझू नी सवाणणी है, ये ही माइन हो ईरा ।” कह'र डोढरी भळे प्रायो हुगी ।

"काई ताव आव ?"

छोरी बोली, "सियोदाउ है।"

'भाव बाई आव, घा-काले ! देखां गूद।"

छोरी गोयळी सामी करदी। गूद तो घपलाहीतून हो। सहर रो भाव सेठ नै ठा हो दस दिन मलां हीं भाषो कीलो लियो हो सोळ र भाव भाठ रो। आप रई करा'र लिया कर, दिनुग दिनुग। तोल लियो बीन, पचास घाम कम हयो पांच कीलो, में ! बोल्पो, 'त पचास घाम रा कित्ता पागा लाग पर रो छोरी है पैतीस रिविया हुया।"

डोकरडी भळे उठी हिम्मत कर र। बोली 'एक तो भोडणियो कुडती भर लग रो बटको पासो क नी घामें ?"

'बगे रो पुछ भा तणीं ही है भावो मत आवो पारो इतो हेन हे तो की मदत म्हे हो करस्या" भर देदिया सेठ बत्तीस रिविया हुया स क्या तीन रिविया घारा ओर बच्या है।'

'ब्यास किया ये, मलो हुया पारो भोए भोए छाया पडघां ही पारी। खने तीन रिविया रो सीधो घोर तोल दो चावळ भर गुड।' देदिया सेठ - रो दो गोळी घोर दो डोकरडी न, कयो लेलिए चाय साग, काल - बुखार।" घासीस देवतो गई डोकरडी-छोरी रो हाथ भाते झाले। हे भडका लिया भर घासीस ही-एक सू मुनाफो भर दूज सू मनराजी टार बो गकर घर में गयो भागे छोटी भाई सालच'द भायोडो ब

'कद भायो तु ?

आयो ही हूँ बम।

'भाव ताव ?'

मोठ सहर मे घोब एक ज्यू ही चल एक टुक गोहूँ एक प' बनूपगढ़ गू। घठ कीं भायो माल'

बोरी बीसेक मोठ

मे बोरो दमेक बाजरी एक पांच कायां। त्रावत टुक में घ' सगळा घसबा दिए ई मे पवार मजूरी c

“भाभी आप ही है, साधु म्हात्मा सू से'र रडी बूची ताई से सेवे ई रो घूट तो ।”

‘बोखो'ब, पिया ही फायदो है आपणो तो, महीने में माघी पेटो मसा छेडो हुती, भवै दो पेटो तो हाथ र इसारे सगै जावै घर भाग बयती हीं लेसो ।’

‘तो मैतजी विदा हुया काल ?’

“तोन ब्यार घटा जबान घटकी ग्ही, प्राण द दिया हा रात न बजी लीनेक, चादा घर हू ही हा बठै ।” इत में ही सालचन्द रो छोरो भायग्यो कनयालाल बाब र पगार हाथ लगा'र ऊभग्यो ।

‘तू हीं भवार ही भायो काई साल साग ही ?’

हा ।”

“भव पढावडी कितार दिना रो घोर है पार ?”

भव एक महीना भौर समझा ।’

“पछ तो पास है कातून ?”

भर पइध 'वा ।”

‘तो हू फेर तो लाडेसर, कोई तिकडम भिडा र मजिस्टेट बण जद भायो तो भागे एक'पांच सात हजार लागै तो लागो, रिपिया राठ रा इयां हीं छोरो बठी ही । ची'व ।”

बी'व भा'वार जाग्या रो तो भाव ही मत लिया, एक पोस्ट भर सो डील र सळ ही सळ ग'जार रिपिया तो लोग भागू छ देवण न तयार बंठा है, घुज । सिठ पूछयो बोल ।”

गू बटो बी'स पारी इया ही गई समझो । उकील पणा तो पार सू पावणो भायोडा उठा । खात रो लोकां तो, म्हे खवा बपू तू इत्ता फोडा ही हुव, म्हार बन ।

सातर सू भोल छा' बाबोसा, हरिजनां रो तो फेर ही तार है बांरो छोरो कोई सुरास है आपडी म्हीन सो चांस मळे ही कीं सोर सात मिल सकै । बांमं भोडू फेर बोली ‘दण पढाई आळा ।’

भजाण, बरोबरजन तो तू ही बता, बाणिय रो बेटो कियो बण ? खर, पढाई ता कह'र होया भाग भाग भोरख जाग सोचस्या कीं लागी तुकर तो लया देख्या

दस पांच हजार बसो बाणियाँ री सिद्धि तो लिखमी सारं है, रूपसी पल्ल तो रोही में ही चल, ई न मूढो सगळा घोव ।”

छारो गयो, घर सेठ रसोई न बड़ग्यो । जीम जूठ'र निक्कळती बेळी, चांदा होळ में सन करी धोरें मे भावण री । जियाँ हीं बो माय बडघो, चांदा किवाड घोटाळ लिया धोर रा, बोली होळ स, 'तीन हजार है चांगी घाळा घर दम हजार नडा मोट है ।”

। घोर की ?

“गणो है घडाणगत रो,” वण देख्यो भरी तीसेक सोनो टुवलो घर चादी पांच छव कीला । गणिय न तो लाल साथ भेज'र वेच बट सतम करो काल न भळे कोई भींभट सडो हुव । बास हुव न बासरी बाज । रिपिया ो भाव मवार कीं म दो है—बारें एक रो, बार तिया छत्तीस हजार हुया, पला एकर चवध रा नाम हा, साथ रा दिन घायीं व ही भाव भळे हुग्यासा ।”

सेठ चौकनो हुयोडो सो ई न बीन देखतो, बारें घायग्यो । जा'र पाछो ही बठग्यो दूकान री गिद्दी पर जच र । गिरधारो नै बोल्यो जा गेटी खा'र भावतो डाक देव लिए ।

सिनाथ घनजी री दूकान बानी भाव हो । स्कूल रो हैडमास्टर मिलग्यो प्रथ बिचाळ सै । बरस पच्छीसेक रो है—यू० पी० कानलो ।

आछी पट सिनाथ साग बी री ।

“माटसाब, इघर वहाँ, आप तो घनजी के यहाँ रहते हैं,” सिनाथ पूछयो ।

“रहा था कल तक, अब नहीं ।”

क्यों ?

“हाथ जोड दिए सेठ को डर लगता है बडे घांमो से ।”

ऐसी क्या बात है सींग निकल आए हैं क्या उसके ?

‘सींग भी बडे पने आप जानते है शिवनाथ जी छोटे घ घे अपने से पार नहीं पडते । महान किराए में, पांच सात सेडले छोरे छोरिघो की पलटन एक-डेड घटे रोज माथापच्चो करो उनके साथ रविवार को भी घेर लेते हैं दम घुटता

था, फिर भी सोचता था, चलो किसी तरह निम जाय । एक दिन सेठ ने कहा, "माटसाब तेल दलिया तो स्कूल में खाता होगा ? 'हां खाता है सा'ब', "तो करो पांच पसा कमाई आप भी, आपके सहारे दो पसा हफ भी कर लेगा क्या हज है इसमें ? मैंने कहा "सा'ब यह कसे हो सकता है, बच्ची का है वह तो ।" बोला "बच्चा उसके बिना पहले कभी भूख नहीं मरता था और अब नहीं होगा तो भूखा मर जाएगा—आप बहुत सीधे मालूम पड़ते हैं । आपके काम नहीं पड़ा अभी तक, पहले वाले माटसाब की लडकी का विवाह हुआ था, बोले सेठजी कसे पार पड़ेगा ? हमने उनको तरकीब बताई "तीन तोले का जिनस बनवाकर दिया, थोड़ा चांदी का झलक, विवाह सारा होगया आपके भाई बहन और कोई बीबी बच्चा नहीं है क्या ? वो माटसाब रिटार होगया, आज भी हमको याद करता है, पइसा से कोई नाराज नहीं होता है ।" मैंने कहा, 'आप ठीक कहते हैं, पर मेरे यह बश का नहीं ।' बोला 'पैसे का जरूरत तो आपको भी है, मगर आप जो थोड़ा बच्चा करते हैं और सोच लेना आप ।' मैंने कहा, 'ठीक है सोच लूंगा सा'ब ।' उनको क्या कहना था शिवनाथजी, मैंने सोचा बिना मतलब से नाराज होगा—सागर में रहता, और मगरपच्छ से बर ठीक नहीं भलाई निकलने में ही है, स्कूल मली और अपन, जा रू हू अब ।"

सिनाथ एकर वीं कानी सरपालु घांघ्या सू रूह्यो, अन्तस गदगद् हुग्यो, सोब्यो "इसी बट्टाना पर मकान बणसी ब हो टिकसी जुग र चाड तूफानी में ।" दो बोल्यो, 'बिषहक रहो माटसाब, अन्धा किया कीचट मे निकल गए आप ।'

वो दूकान र बरामद में बढायो । खुश मे एक पास बोरया री याग जागी पडी ही । बरामद री सफेदी पर सामोसाम 'तुलछी या ससार में भाठ भाठ के लोग भर नीच वीर "अनुशासन देण को महान बनाता है ।" पेठ लगावो, परिवार नियोजन करो' ई डग री दोच्चार ओल्यो और लिटबोडी ही नास भर मोट फूठर हरफा में । पांच सात महीना पसई, इसा हरफ बरामद री पूनमें हीं कोहानी । सिनाथ न देखता हीं सेठ बोल्या, 'भावो सिनाथराम हीं यान बुलाऊ हीं हो, ऊमर माटी है सा याद करते हा आ पुग्या ।'

'ऊमर मोटी है तो फाडा ही माटा पडसी । भाणों तो हो ही मेठा, अघ पडा बगो भाययो हुस्यु ।'

'समझारी करी पण बिना बतलाया हीं यई जिता घावण घाळा सम भदार और कित्त लापसी पाव में ? मन तो डर लाग सिनाथराम क बतलाया

कोई यायां नहीं पड़ज्यावै—सकू हू तो कंवतो ही । मरगो बी रो ही घर सेठो बीत हीं । इस मोवे जे कीं नहीं करं तो ही मुदकल । आली रात आख्यां मांकर बाढी, दबका, चिट्टी पत्री सँ देखी समझी जावतां जावतां या मुळावण दी म्हाराजसा, क, रिपिया म्हारा बदाई घर लया, कोई को नटनी घर प्रसाद म्हारो रामत्री लेवै, म्हारै सरूप सारू कर देया । बतावो भवै, म्हारी काई दसाली है पण दोखी तो है घर सोखी तमास्त एक घाघ ।'

“करणो ही चाईजे हरी है पुन, रो जइ, ई में जे पांच रिपिया घर सू खीच तो ही ये समय हो—कीं जोग हुवै बीनै ही कईम ।”

“जोग जाग, आस्यो है बीन लघाणो तो पढसी पार, यां सगळां रो बाव है, तो फेर मन चित्तः ही ब्यारो ?’

“मुळावो म्हारै डौळ सारू म्हान हीं । म्हारी घरज या है सा, मँतजी रा दोय सँ रिपिया घर दो रो मिति म्याज आपन भगलां रा, दूध खोळ र देणां है पण तीन प्यार महीनां बवार खलियो नहीं निकळ जद ताई बगना बोझा है ।

“दया काई करो सिनाघराम, सरायोडी खीचडो दांतां चढ रुळावो हो नी, हू तो बोवणी ही यां सू करो चाळै । आ तो नहीं हुणी चाईज, समझो स्यामी मोडां रा पद्सा है पास मोलाद आळा हां आपा, आपणै काई काम रा, टैम पर सागग्या घर ये निरवाळा—कजों घर रस्तो, तो काटपा ही, भाषा—वयो कमजोर करो मननै ?”

‘हुतां थकां देवण सू कुण नाराज, पण अणहूत ये समझो हो भाठ सू कादी हुवै, ये वारै कनै सू भेळ दो एकर, आपनै हू प्यार महीनां छेड दूकता कर देखू ।”

“हू बतावो कींन कींनै देखू पांच सात हजार रिपिया सिढायोडा है बांरा, समझलो ई मौकै हू वारै गयोडो हू का मनै सौ बरस पूगग्या हुव समझलो, तो ये क्रियां करो—म्हारै नहीं हुयां वाम घोडो ही रुकतो, म्हारी घरज या है आपन, क जित्ती नीयन लेवती बेळा ही, वा ही भवै राखो ।”

“नीयत म्हारी बीं बळा ही माडी को ही नी घर न भव ।”

‘नहीं माडी है तो बगसावो, प्यार महीनां पख कण माग्या, घर कण लिया ?’

“कोई तो बादर भोड़ें ही लो बाँरो जाग्या, बीन देस्या ।”

“अबार तात धाव ही को देवोनी तो च्यार महीना पछ भगत भजाण न कोई भोळमो देस्यो ? इयाव है प्रा । यारं धापर हाथ सू मदपोडा है घोळें पर धर ये भसळाममळा करो, निदा हुमी गाँव में धारी, कैंसी बो पानं कैंसी, स्वको राख देस्यु हू तो पाच पचा सामो ।”

धव सिनाथ सू को रहीज्योनी, निकळगी बीर सूळ सू, “हू तो च्यार महीना पछ हाथ जोड र स ब्याज देवण री कैंऊ, भगला रा दिया में लिया, धारी को करीनी कैंरी ही, जिक्र में हीं इयाव है म्हारो, निदा यारी ही हुसी म्हारी, धर ये बाप बेटी सारी रात बोव हा पेटी धर गाँठडभा, धारी बडी सोमा हुसी—देख्या घम र पूछडा न ।”

सेठ रो चैंरो एकर गईजग्यो धर घुलग्यो धोर—एडी सू लगार घोटी ताई, बण सिनाथ कानी धाधो मिठ ताई देख्यो निजर गहोर, मिनस चराव बो, समभता बाई ताळ लाग ही ‘रात नै बहर मो.ही घामो हो ।’ बोल्पो, “ठीक है सा मत देया, मैं माग्या म्हारी भूल हुई, मन कोई ठा.हाम करता हाथ, इया बळघी, स्वको धारो पांच मिनखा में गल देस्यु, म्हार भाव बीन फाड़ फेंक्या, भला हीं राख्या, भाया तो दूसर जे धान वतळाव तो देजातिया समझ्या भला हीं ।”

“राख देया, फासी हुव तो हुवण दया”, कहरे बो लडो हुग्यो । सेठ बठ ही बैठो रयो । मन में बस एक ही घुषण—जठे भण भा कई है वठे पांचे दिन धो धापांनै धणचीर्या फोडा ही बाल सक, पांच पचास लागर ही ई रो कीं दूखीं हुणो चार्दज । दिमाग बण दोड़ायो, दोड़ायो ही, जकरत सू जाण । कलपटी री रगां तणोजगी, धर मायो मोकळो गरम हुग्यो, पण, दिमाग दोड़तो बण को हुयोनी । दुविधा में रम्यो लाघणो दोरो हुग्यो ।

धिवड एक जाग्या जांर बो रुकणी, कांटो निकळ जयासो पण, धापां न चोर्डे कैं ही नहीं धाणों है । बडूक छोडण नै कांधो दूसरो चार्दजसी, एक पड़ तो एक मजो दो पड तो दो । है एक कांटो—कांट न कांटो ही काठसी । मन नै कीं ध्यावस हुवा । उठरे बो एकर धर कानी गयो परे ।



चिन्तन की टम ही । घनजी की बाखल में छत्र मात छोरघा—दस दस बार
 बार बरसा री । बैयां र मली बाखलियां सिर उधाडा केन बरडा भर उल्लख्योडा,
 चैरी पर भूर, पेटां पर मल रा रींगा भर पग उबाणां । दो एक र मला चीटा
 कोटडा हो पण भीर भीर । इत्ती ही लुगायां घोर भायगी । सगळा र हायां में
 पारिया, कूनडिया का काळी पीद री सिलोर री मुची देगच्यां ही । दो एक न छोड'र
 सगळा री बगलां में का मायां पर लील री छोटी छोटी भारक्या, हुवली दो दो
 तीन तीन कीलो री । घणखरी भ नायक भर मेघवाळां र घर री है—एक आ में
 डोलण है । सगळी छाछ लेवण न भायोची है भठ ।

घर र घुगीमोड भाग एक चौकी है, बीं पर एक पीडो पडयो है ।
 सेठाणी बठी है बी पर, घोळी घोती भर एक गोडें पर तुळछी री माळा मेल
 राखी है । घनजी की मा है भा—बरस सिलर बवत्तर र भदाज । भाग छाछ सू
 भरी लोह री एक मोटी बाल्टी, कीलो प द्र नडी छाछ माव जितो घर राखी है ।
 अथ कील'क री एक लोटो है—लकडी री हृत्यो लाग्योडो सेठाणी बीं सू छाछ
 घाल । ढाई तीन कीलो जाडी छाछ घर मे पला हीं भेजदी, लार बची बी म
 पाचाना पाती पाणी रळा'र बाल्टी भरली । कीन ही एक, लीलो की जादा हुवें
 तो कीन हीं दो भर कोई नहीं लाव तो बीं नै चिट्टो उत्तर ही ।

एक छारी चौकी नीचै आ'र ऊभणी 'लावो दादीसा, भावण दो ।'

'धारी भारकी कठ ए ?'

'नाखदी नी, दादीसा, टोघडिया र ठाण मे ।'

बूढी मर, ला देखा मन ।'

छोरी ठाण सू, लीलो नाख्यो जियां हीं ऊंचा'र बोली, 'भो देखो ।'

'दो गुवाळा ही पूरा को हुवनी, इसो काई लाव, कीं तो लाया कर ।'

'काल ई सू हुणो लो थे ।'

“ल ल मायो मत लगा, जाणू तनें दुखो सांवण झाळी नै,” कहूँर एक सोटो छाछ घालदी । छोरी बोली, “काचो काचो भुट लई हूँ, कीं तो और घालो दादीसा ।”

‘फोटाई मनें को सुवावनी,’ घाघो’क कळसियो कर’र ‘सँ घोर, जा परिषां, ओरी न हीं पाती घावण देसी’क नी ?”

इयां हीं और लुगाया पतायां न हीं छाछ घाल हीं भर ब भावरी भारक्यां टोषडियां र ठाण में सेठाणी न दिख दिख नाखें हीं ।

एक लुगाई नें पूछयो, ‘मा कींरी बहू है ए ?”

एक जणी कण हीं कँयो, “मासू मेघवाल रै बेट री बहू ।”

“है ए सुणी है, हाय री चतर बताव तु, टोषडियां रो ठाण तो सावळ करदे घोडो, पीळी घर पोटां रो सेव कर’र । पारियो एकर, मू घो मारदे भींत पर दो मिट सागसी तत तो ।’

अण बापडी पारियो राखदियो, ठाण ठीक करणनें गई परी ।

इती में पंडित रामधन भायग्यी, सडाळ पेरपां, केसरिया साफो, हाय में पचपात्र, भर जेब में टीपणों । पाठ करण जाव हो दूकान में । बोल्यो, “लो चिरणागृत ।” सेठाणी हाय मांड दियो,

‘अकाल मृत्यु हरणम्, सव अ्याधि विनाशनम्,
विष्णो’रुम पीत्वा पुनजन्म न विद्यते ।—

इलोका बोसतां बोसतां पंडित पांच सात टोपा निवोण कियोडी हवाळी में मांस दिया । सेठाणी बोली, “नाड घाग दो साहू पडघा है नेजाया जावता ।”

‘ठीक है ।’

‘गायत्री रै पाठां रो ये कंवठा हा भी बंद कई करत्यो मुरु ।”

“काल मोर में इमरत रो दूषडियो है मुरु वो काल ही कर देख्य ।’

‘बरे ठाकुरजी री सेवा करण नें पछ ?”

‘घोरी या बाबी ।”

“घर भाणिय रा गिर बरदा है, छाछरजी रो दान मरावण खातर ये बवता हा नी काई काई समान बडवा'र राखू ?”

म्हार ध्यान में है, घर साठी बार बजी हू घाऊ हू, बिना कर्णों हों।”
छाछ घाऊ पीच सात घोजू राइो ही पटितजी बां सामों देण'र बयो,
'मिनस जमार' रो मोख सूट गेठाणी जी, छाछ भवार रो टैम में पड़ो कठ है
दूप छोड, पळोबण रो पाणी तबतक बेचदे भोग, छाछ तो टीकी देवण न ही
को साध' नी, व्यासजी रो घो ही कयाडो है ब' पर-योखण सो बोई पुन को हैनी।’

गेठाणी र घर रो बहू थोडो ह'र, धाँस्या में ऊतरयो घर मन री खुसी
पानां रे रस्तै हुतो एकर सारी चेतना में फँसगो। छाछ नें बढीकती एक वूढो सी
सुगाई बोसी, “म्हाराब मेव रा रूस है बापड़ा भज'र भाया है, घाला जद म्हे
हो बयों घालांनी कीन हों, घणी हों मनमें घाव' पण घाला काई काळजो का फोडा
कीन हों ? लप घाटो जर चिबटी सूण मिधं नास'र बडडो साग टुकडो कठां
उठार सस्यां, घासीस देस्यां घानें बतावो ये, भवार कयारो साग करा दस पद'ई
तो काई ठा ठाकुरजी कियो तो, पळी कूयी बीं बापर सकी” —

डोकरी भापरी बात पुरी बर'र पूरणविराम ही को लगायोनी बीं सू
पलां हीं डोलण बोली, घिरियाणी, चौगुण भाग, किरौडां पर कलम चलावो
लिछमी रो नाथ, छाछ कठ गाव में घणसरं घरां तो बिलोवणां बसाया हीं छोड
दिया भर केयां मू घा मेन दिया बांरे नीचें गिलारी भर ऊंदरा लुकमीवणी खेल।
छाछ का तो घाँट का हजारीमलजी रे दो नारळी कारू कमीष न मिल-ब्राकी तो
राम राम है। मेव रा रूस है घनदाताओ जलम सुधार, पोखण न हीं भायोडा
है-घरती पर। घिरियाणी मन हीं घालो घोडी, टुकडा भिजाऊ जा र, सोड री
न्दिां ही को बिचरोज नी, खाऊ ही कियां बान, पीरू रा लापाडा है।’

‘तू की फो लाईनी ?”

“जाऊ तो धरियाणी ओ बडा भाग, म्हारा किसा हाय-घमीज गोडा
पुळ, अठ ताई ही निठ घाई हूँ टसवती टसकती। काल टीगर ने कसपू पदडका
मार टीगरा साथे लोट पाणी रो ही मुख को है नी भळ ? घालदी पूणो एक लोटो
बीन ही। एक छोरी न को घालीनी, बा बठी रही।

‘भा छोरी कीरो है किसोक मिजळी मरै, आग्यां भास'र हीं बँठगो, बयों
तन छाछ भाव टोघडिया न लीलो को भाबनी, काल ही को लाईनी ?”

उत्तम मूड छोरी बीन देखती रही अणबोल अर बेबस । खाली पारिये
 बानी देख जद एक काळो छायां बीरे घेरे पर तिरं अर काळज मे एक भय ।
 बीरी मांयनी पीड़ नै कुण समझै भा मरगी नातै भाषोडो मा रो जी हँ सातर
 बद पलीजे ? कयो है बण, 'छाछ ले'र नही आई तो रडने घर में को बदन दूनी"
 बी मा न इमो काई ठा कै टवस लियो बिना सेठानी रो अफसर छाछ रा दरमण
 हो को करण दनी । घरे मा मार गोबर फेडी राख, कद लावै सीलो बा । सेठानी
 उठणु सागी जन् छोरी बोली, ' बाल हूँ हीं ल देस्यु सीलो ।"

सा देसी घूँड बोरा रो, उळ घांगो" पावेक घोवण नावगी पारिये मे
 जावती जावती सेठाना ।

घो ही हाल हजारोमल जी रो है । बारी महु है बेला तेला अर अठाई
 पणा ही करलिया, घोजू करै तविं भोवै जिंसा, कैई दफ भाईपो अर भाई परसयो
 जिमा गिया पण यरीव गुर्ब न छाछ भिण'र घालसी । चौमास में लीलो, बोरिया
 र दिना में टाबरा सातर लप दो लप ऊतरा बोरिया, सांगरी, करिया, फोगलो कीं
 हुबो हाय ऊचो किय रो बस पड़ता कीं न कीं लेव ही, और को नही तो बजार
 माय सु पाव, अघसेर जाना रो मुसायजो तो अगले न राखणा ही पढ ।

हजागेमलजो रो घा ही सोष है कै टोषडियां सातर पइसा सट्ट लीलो
 लियो बद पोसायो, रोही में बचरा घणों ही ऊमो है, म्हे सो कोई जावण सु रया ।
 पापणा हो नारळी घालता हाय को घसीज नी तो अगले रा दो करळा कूटळो
 सावता बिछा हाय पसोज । टोषडियां रो हुक म्हे अगला नै घाला, तो बदळे में
 टोषडियां नै ही हीं निरावां तो सरा ।" कने ऊमै रामघन पडित क. दियो,
 'बात नै तो सठा बाध हो रेंणी परगी ।"

'नहीं धो अगळें रो ही, काम निकळायो अर घांपणां ही मुतळय सरायो ।

' घर गाव में सोमा अर पुन रो जठ हुरी ।"

सैर पोम्पां तो पुन हुवी हो, चोखो की वापड रो घांतो ठर तो ।"

बिना मा रो बा छोरी, बठें सु घडै भाई एक बुट्टू अर छाछ बण रस्त
 में ही यमोइली, सीटी सागी बीने, जी में भाई मगळी ही बूट दे'र गट में नांखदू
 पण हरगी बा । चौकी घात मही हुगी जा'र । मस पद्रे मिट बण ही को गितारी
 नी बीने । रोडट एक छोरे देखती बीने, बो बोयो, ' दादीसा, सदा घाळी बा
 घोप ऊमो है चौकी घायी ।"

‘भरे फीटी बर्तन बा, लिया बिना किसी सिरकसी, बारणा कणु खोल दियो, नारली एक घोंवण बाळ घाल भागो ।’

छोर पाव एक थोळो पाणी घालर बापटी नै काहदी, बोल्यो, “भरके भाई तो कूटू सो ।”

×

×

×

छाद्य से‘र दो एक लुगाया घनजी र घर सू निकळी ही, वान कोटवाळ रै बंट रो बहू सामी मिलगी । दाटां र मिस्सी घर होठ साव कियोडा । पना में प्लास्टिक री रासी घप्पसा । एक जणो बोली, ‘डावडी छावडी तो की म्हांन हीं घसामा कर, घारी बली ।’

‘चालै हूँ किसी मालकण हू बठै रो ?’

“म्हे तो सेठाणी ही समझां तन ” कहू र थ भाग निकळगी । सेठाणी, पांढे पर बंठी बठी चाय पियै ही, का भगण जायगी, बोली “सेठाणीजी सा, महीनो हुय्यो एक रिपियो देवो अर एक कोई कोटडो बगसीस करो ।”

सेठाणी भापरो सू डो कीं फोर‘र पूठ बीं कानी करली । इत में हीं घनजी री बहू भायगी निकळ‘र कू टळ सू कम काई हुवैली । बोली “दस दिन ही को हुयानी कोट दियो हो पूरो महीनों बीस दिन ही परघोडो को हो नी, ईया घठै काई शीण हूँ कपडा री ? रोटी एक देवा हीं हां रोजीन रिपियो यारो ।”

“तो हूँ भीर कठ ही जास्यू लेवण नै, पेट तो म्हारो ही निकळनो चाईजी । भाज पछ दो रिपिया लेस्यू हूँ रिपिय में को पोसावनी ।”

‘इया रिपिया घाकां र साग है काई ?’

‘घर मे रामजी पन्द्र जणां हो बेल बघो ठाकुरजी म्हारज निबटो तो ये सगळा घर में ही पाच सात निबटता हा तो ही रिपियो घर पन्द्र निबटो तो ही बोही एक छूतको ? म्हार पोत न फाटघो पुराणो एक जाघियो दे दियो तो म्हे तो बीन जरी रो कर र माना, बीं पर इतो किरियावर करो, पण परसू बाबू री नुई री नुई पट टोघबियो खापग्यो, बीरो किरियावर हीं पर क्रियो, दियोडो तो अमर हुव भर जिकै में म्हारलो काम दूसरो कोई करल काई ?’

‘घो तो आप भापरो किसब है ।’

इत न बीरो पोतो प्रायव्यो बारै, तेर बरसा रो बोल्यो, 'दादीसा लावो भावो देवो, ये कयो हो नी, में मरपोडा दो कबूतर उठाया हा नी बरामई मे सू कास ।'

"साथी रो साथी सू छाती बाजल न भळो कठ सू भाषायो," वा उठो, एक कटोरदान सभाळपी, दो तिलिया लाडू सकरायत रा कियोडा, सात महीना पसा रा ऊबरपा पडपा हा, सा'र दिया । छोरें एक दाता नीचें दे लियो घणो ही जोर सपायो वो फूटपोनी । बोल्यो, 'म काई लाडू दिया है दादीसा ?'

"तो पार सातर भदार बडाही चढ़ाऊ, लाडुवा अिसा लाडू है, इसो तें काई होम कियो म्हारें, फोट ल कोई भाठे सू ।"

इत में घनजी आषायी, बोल्यो, "क्यों, काई रोळो है नघिये रो मा ?"

'म नदाताजी पेट तो म्हार ही है, भरोज नही जद कणो तो की पड ।'

'इतो बडो गाव है घर पारो पेट ही को भरोज नी, पेट है क गोदाम है काई ?'

। बट नै काई मिर पर ऊसणू ? छू सको सी पतळी पारें आठ दस घरां में राटयां घाव, एक टक तो खर दोरो सीरो काडदां पण सिझ्या तो हांडी चढाणी ही पड । मू पाई यान ठा ही है, भाठाना रो ये एक मिरकसी तेव देवो; एक साग ही सावळ को नमजीज नी । घघबें कीं घाय पानी ही चाईज; मिध मसालो ही लाग मारनाडाओ नडो मेडो ही बापर, साली म्हारी बेळा इत्ती रपाणप कयो करो— निदानी बघावो भगवान ।'

डोहरी रो बेटो भळ भाषायो, बोल्यो, 'रोज रा एष गघो तो पारें घर मू ई नगेमें रिपिय में को पोसावैनी, रिपिया तीन देला पडती, ईसू तो जाट जमी'र दुमरा भासा कबेई कोई मि'नो कुसो उठा तियो घर होळी दियाळी निचारी भेदनी, छटा बापटा ग्यारो थान ।'

'मा ही घर बग तीन, सू टलो म्हांन मुग दाई हुमी" छेठ कयो ।

'मा भनदाताजी, सू टण पू टण री जवान मड काडोना, पळो पूचो भेवै रा कब हो दे, म्हा तो दिया सेवा, म्हारें साथी घणों नान्हीं लेखो करता ये फूठरा वो म'सोनी ।'

“ठीक है, ठीक है, कामडो टैमोटम करता रीवो, एक रिपियो घोर
देस्वा ।”

बे मा बेटो छेहें हुया, का पचायत रो कोटवाळ प्रायण्यो, “सेठ साँव,
‘भवार रा भवार बुभावें प्रापने, पाणुदारजी प्राया हूँ ।”

“सेठ घमक्यो एकर, फेर कीं सभळ’र पूछयो, “क्यों प्राज इसी काँई
बात है रे भोमा ?”

‘पूरो तो ठा नहीं सा । पण गुरबराट सू कीं था ह्यो भणक पडी क
नसब’दी रो ही कीं रोळो ह्यो चाईज ।’

सेठ गयो, प्राग देख तो सिरपच, पाणुदार पटवारी, गाँवसेवक, दो
एक गाँव रा चलता पुरजा भा’मी घोर-भर साथी सेठ हजारीमल बठा हा भेळा
हयोडा । जंरामजीं री कर’र, धनजी ह्यो जा’र एव पासे बँठग्या ।

पाणुदार कयो ‘प्रावो सेठां सगळा ही सुणो ये, नसब’दी खातर बडी
करडाई है, सरकारी मुलाजम न तो आख दोठो ही को छोडैनी राज, ५
कितो ही सिफारसी हुवो, कण ही थोडी सी ही चूषण्पर... इत में हीं धनजी
ससपड तिणखा रोकदी भर घणी तीन पाच करी तो... बोली “दस दिन ही को
रिटायरमेंट-बोसो कीं काँई कर ? तैसीलदार नाजिरी को हो नी, इया अठ काँई
कर-गाँवां रा धादमी जाव बान कब-एक काँनी नसयो पारो ।”
पेसकार पटवारी सै साग-कप र कन हीं कचेडी । रो ही निकळनो चाईज ।
समझा बुझा’र लावो सोसाँन, नहीं तो जोर जबरदस्ती
सुण हा चुपचाप भर देख हा टुकर टुकर पाणुदार सामो

पाणुदार ही देख्यो एकर बार सामो की रोव सु, वे
हां बात की प्रसर कियो है । भ्रवाज भळे निकळी मागी ही सुरां श्वाराज निबटो तो
हैं भ्रवसरां म्हान ठा नहीं काँई करो थार हलक सू डोडत के पत्र निबटो तो
भ हुण हा चाईज नहीं हुया तो ना काबलियत तो है ही नौकरी पो दे दियो तो
प्रसर पड कीं कीं को कह सकनी । पटवारी भर प्रामसेवक जावो परसू बावू
बजी, दस बजी भर बार बजी ताई दो दो प्रा’मी ये लावो-साहर कियो,
मिलती बान जोप में प्राणं पढा र लेजास्या, भर चढा’र ही कालोका ?”
बाड देस्या । हाँ सेठां दो दो धादमी ये कर’र दवो, ‘ध्याज विस्व
करो’क नी ? पाणुदार थोडो करडाई सू दोनू सेठा न पूछयो ।

“करा सा ।”

“साहितेस है ?”

“नहीं सा ।”

“तो सीधा ही जावोला हवालात में ।”

दोनू हीं देखण लाग्या घाणुदार सामो काळजो जाग्ग्या छोटण लाग्यो ।
घाणुदार बोल्यो, “तो पूरो मदत करो राज री, भासाम्या नै पटाणो तो श्रीर
ही स्सोरो है, चारो काई केस है तो मने बतावो ।”

“सा पूरो कोसीस करत्या ।”

“पूरो भपूरी हू को समझूनी, पांच पचाम गांठ सू देणा पढ ता देवो,
महीं तो ये खुद ही फेट में घा सको ।”

“मै घर, म्हारी तो ऊपर ही निकळ ,” हजारीमल कयो । सेठ रो
“पूरो ही को हुयोनी, बीं सू पला हीं घाणुदार बींन काट दियो, बोल्यो,
है काई ।” “महीं राज र तो कोटो पूरा हुणों चाईज, घर सिरपचा ये ही
बड नै काई सिर । तो हू जावतो लेप्राऊ लो ही । कोई कीं थोडो देव तो
राटयों घाव, एक टक सो ।

पढ । सू पाई घान ठा फार री खोज में निकळ्या ।

सावळ को रमबीज नी पर घाल ही, केया सागें सिररच री नाराजगी ही, रडक
अन्यावाओ नडो मेरु मोको मळे कू घासी, जिता राबी ब हा वित्तो श्रीर कोई
निघवी बघावो भग

दोहरो नै बोल्यो, ‘पनजी, घावनी, घापणें बूड धारें कठ ही पीर करद
गू र मगीज । रिही है बा ता ?’

जकींर दूसरा

निघारी नेपने ‘सुर’ सागे काधिया ही वळ क्तेई, किसी ही गोरमिट हुवो
तो घदा सू हीं सिकतो घायो है । लिछपी रा वेटा हा, लोकी रा
‘ह ।’

‘तो घारोन घर किसो चवरो बठणों है ? हजारीमल हस’र कयो ।
रा कू महीं घो, अंगमग तो गुपी है, होम में हीं को बठ सकंती, जियो
को ल, मना ही है पांच में ।”

हजारीमल रें घर कन बरस बाईस तेईसेक रो छोरो बस साधा रो गू गो है—जीम जल्म गू ही को उचळीजनी बीरी पण काम करण में सँठी है। द मजूरी जची तो बरसी दो दिन नहीं तो च्यार दिन सामों ही को जोयोनी गवाह बिषाळ पीपळ रो गट्टो है, यों पर चरभर खेलसी, का मिन्दर रें गु मारि में, पडित रामघन रें सामो बठ'र चौपड़ री कौटघां फेंकदी, समरु सगळी है एकसो ही है। आपर भूपडिय में दो टिक्कड सेक'र मस्त। घाटियो कनेई नीका य्यो तो, चरुडी मांग घाव। अमावस पुयू हजारीमल ही पाव डेड पाव घाट सीधो घासद। सेठ देख्यो भूतत नें भायोसाई, ओ फायदो तो आपां हीं उठावो एक तो बीने भर एक आपरी भासामी—बरस चालीसेक र एक कोटवाळ नें रया कर दिया। 'ब्याज बिसवो की कवळो कर देख्यो, भड़ी मे घाटो काड देख्यो' इत्तं कैया पछे गरीब भासामी री नस बाई तो ही एकर तो को बोलेनी।

घनजी ई न बीन भांख गसारी—रामद्वार में बरस साठक रो एक साध है साव भोळो भर सूधो। गोरी कया ही डीक भर काळी कयां हों आपो भपवो भर आपो धोळो। सेठ सोच्यो घं ठीक है नी, न कीरो ही घर ऊजड भर न कोई बीनणी बिराजी हुब घां बिना। होळी स फीचा में देवा तो आपणी गिर टळीं। बोल्थो, 'पघारो स'तां आज सिध्या घोडो जीप में जा र घाणों है, काल मोर में घानें, हागघर दो मिट देखसी, फेर हाथो हाथ ही घान मोटर अठे उतार दे'सी।'।

“रामजी राम आप जाणो देख ही तो जाणो पड ही, आप हू कियो छानो है?”

हयां ही बरस पताळीसेक रें एक नायक न घोर चकरी चढानियो। दोत्रु हीं बरी हुया। मोड खदेई नीच कद आप, मजो ओ व दोनां रो ही टकां लायो। पइसी, बाकण बेटा देवक लेव, पण ?

□ □

दो थो सू आपूणो पावडा पचासेक दापां दरोपी रो घर है—एक जूनी साळ घर एक कुच्योडो सो भूपडो, घर रो मडाण बस इत्तो ही। भूपड मे थूणी दे राखी है, बीन हीं घाट राखी है उदीवळीं। साळ म दियोद घणी ही किरम्यां जाग्यां छोड पड हीं नी। बां पर दियोद

पुराणा चट खज र खतम हूया । कदे कणास वा मागू इक्का दुक्का कावरा पढता
 रव । सुळी कहणी भर किरण्या र बजका मू छुणना घाटो साळ र भांगण पर
 पीळ पाडडर रो टीक्या माहद । च्यार सतीर है दा विडकयोडा भर दो की
 सतसर । पचास साल पुराणी ई साळ न, लखगाद है दीपान, भोजू को द्विपण
 दीनी । पाणा रो पारियो भर गर रो झू हो, चेत उतरण ही को दनी, पण भवै
 सुद ही दो पय प्राण निवळयो साळ मू, होल ही पुरो का सभनी ।

घाधी साळ में लादेक कूठर गलो राख-महभाखड में गाय न नाखण,
 पर घाधी में भापरो मेना-छोडो-गूण्ड भावा, टण रो एक पेवटी भर एक तणो
 पर दो तीन छेसला, कामबळ भर भावला छो इत्तो सो पतकर । भूपड में चूल्हो
 वाकी हांही, पारिया भर एक छेनेही पर छाणां बळीतो, नीच बीरं, घाटो घूटो
 पर न तीन कूलडिया में लूण मिच ।

विता भासराम—विता हा जीव घर में, भा देतो । डोकरो पसठ री
 पाम पावे है भर छोरो वरस छाईस सताईस रो नांव तोळू है । दो टावर और
 हा पनां एक पान लाम'र पुरो हुयो, एकन पाणीभरं उठालियो । तोळू भग रो
 कीं भोळो पद, पण भुजायो काम मज रो करे । सरीर दा चलतो मोटियार, पाणी
 दा पटा लाव भर छेत मळ रो सगळो काम कर । घवार कीरें ही बढसियो जाव,
 का मजूरो दा सात भाठ रिपिया ले'र घर में बढ । डोकरी रो सोभी काम
 चलाठ है, हाथ एक थोडो धूज ।

मावण में थंसक मेठ हुयो जद, साळ घोई दो जाग्या मू भर भूपडो
 भरघो घर्णां मळघोडो हो बठ मू । माळ में घोरो एक कचरो भोजघो, पीडिया
 बघण सागग्या जद काठ'र बार नाख्यो । छणी परला पुर भातोगार हुयां, दान
 सुकोया वेडां में कीलो एक सिरमट पाई-धनजी र भठ मू लो रिपिय कीलो ।
 भूपडो दया हीं रयो-भाय बाठ चौमास पख । भव भाय पर भळे भीड है वाण्ळी
 री । डोक्या बोली तोळू, काटक'र पटी बिरला तो, बटा, मिर ही कठ लुकोवाला,
 हाडो ले बठसी गणगौर ने, बगळिया छेड जा पदसो, भापणें मू भळे, जळणी सी
 सदा ही को हुवनी, मू झू हा दो एक सळाईं आलो मुरड ला, भर है इत्तं गारें मू
 बोडो दहलू, मेह भर मोत रो काई भरसो लाडेपर, कद भा पड ।" नो बोळ्यो,
 'मा, कोई बळघ गाडियो मांय'र पाच-सात मू हा साग हा । नाच लाळ, लेठो
 नि' केई दिना रो ।'

“हाँ, ओ तो और ही घाछो बेग ।”

बो मुरड न दुगयो घा गारो घालर बठणी बीडी दहन न । कूड न
एक कीर पर ठैरा राखो हा कापत हाय स गोबर रो लीयो काई ही वा कूरो
पढयो नीच खळीळ बाख्यो, भली हुई भाप को पड़ीनी, खडको मुणर पाढोसण
प्रायणी डोकरो न बीढी पर बठी देख रं बोली ‘कूड बाई कुनाव करस्यो काई
खेडा हुयो, हँ दडदू हँलो मार सेणो हो मन ।’

“याल करसी बीनणी, घारी बेल बघती किया ठाकुरजी, घार हो
भासर पडी ह ।”

“भासरो ठाकुरजी रो है, पण अब तो दादी, दो महीना रो फोडो और
समझो देवठणो न तो घाई बीनणी ?”

भूखो घायां पतीज बीनणी, घारो मू डो घी सक्कर मू भराऊ, बो
दिन हो कदे ही देख ।”

‘गणियो तो चडा दियोनी ?’

“चादी रो एक बोरियो भर पगा में पायलडी है छूतका सो, और काई
गणो हुवे बीनणी, ओ ही निठ तावे प्रायो है ।”

‘कीं रीत भांत लेवलो सगो ?’

“हजार घाठ स तो लेसी ही बीनणी, लेखो सिरावो, कीं हूँ कियो
भर कीं गाय गोली बेच बटर एकर नाको तो किया ही नि”

“युणी हँ दानो छोरी मे कीं कसर है ?”

[चडादियो । दोनू

“कसर बीनणी घर घराण में तो भाज ताई ही क ही टका लाग्यो
सोनो है, छोरी रो गक प्रसि में छाह है मोठमान । परे भाय
सफा हो फूट जेवावे तो, ओ कीं पुकार कर बिया दोलद हाड घर □ □
है । हू तो बहू जे वा साने थोडी थोडी हुवे तो ही राजी हूँ, भागण रफोरता ते
तो देख कठे ही, सासी भागणो घणो ही मडोलो साण पण जोर काई ? भव
साडेसर, न तो गारो गोबर ही हुवे, भर न गावही ही सावळ निचोईज । पणो में
काई है, टुकड़ो ही सावळको सिकनी, ओ देख तु पूच कन, तोय पर रोटी
उपलती बेला चरडको चपलियो ।”

‘ओ, सासो बाळ लियो, फालो ऊपडग्यो, तेल रो भागळी सगाई हुवी
कीं बेला कीं ध्यान राख्या करों ।’

“भाए रो नेल ही को घड़ हानी, तो ही कूलडिय में पडघ चीटै रो चिकणाय लगया की फेर हो ऊरड तो गयो ही । मू पडियो तो, मतो को हो नी तो ही खवायो कान की, चानणों दील हो माऊर, मइ भाळ दिन खेवणी त्राई धाययो पाणी, समक रात को सोईती, पाणी उळींच्यो, टापरियो की खलसर करसू तो चौमासो बदास की स्तोरो निकळ, पछ तो खेरड कूई कवाडियो उतरायणी हीं पडसी, बहू, ई टम में अवार मीतळी ही सही को-दुईनी, मुवां धामरो करणों म्हारें तो भाखर मू भागीरथी उतारणी है ।”

पाडोसण बीडी दइ ही, डोकरी भायणों में ऊभी हो, का इत्त में ही हीरो नापक भायो बोहयो, “दादी काल भाळा पडसा भू पडो धुवाई रा ?”

“वेटा एक दो दिन ठर तो, माईताळी करै, पीरू नोळियो धापरो दैनी लाती, हू बिना बतळाए ही पुपाळ घरे ।”

“पीरू कीने, मन धाज घाईज सिध्या ताई, मैं पैला हो कहदियो होनी उन के पदसा देणा पडसा काल, धर त हा भरी हो ।”

“भरी ही भाई, किसी बूढ बोलू हू, नही ठरती तो सामू कठै मू ही, पण इना मवार काई कुडकी जायणो यार ?”

“कोई सग्लो सम्बधी धायोडो हे, सिध्या कीं गुटकियो बाने देणों वाळतो का मजूर ।”

बताव है हायपळजोया धो लापणी कर'र खुवावनी, बों मूत में काई काडस्यो, रहुस्यो कठ ही ?”

सावण भरयो घणों गळ हूयो दाने, जाण्यांमर में ही करणा पडै, बादमी और कमावें ज्या बघण सामग्या ।

मुनीया, तेडा रीं भो पीकए नै हीं कमाव, काळ रांड दाने रो नांव, हू तो ता'र जोर करस्यू, घडी धो एक न भाए तू ।”

बो गयो धर गई पाडोसण ही । डोकरो कूपड में गई । छेनेही नीच पळतो दधो एक तपेली हो डाड कील री । धो हो यों में । निको निबा, मडोने भर म भेडो चियो हूयो । बोडी सी कांकरो मू तोळू री रोटी रो पापड भास देंवती, मिम्या बीरें खोचड में कीं मुत्तघ कर देंवती, धाप बापडो नै तो धो हो ही कठ, “वका पूज भोजन नही करणा” ई खातर छेने री साळ कीं बा ही नाव लेंवनी, बापटी बेटा ।

गल्लनो छेडो किया, पीळो केसर, लीलां रो घी । सोचै ही, 'भाव हडमानजी रँ पीर पर ही दो टापा को नख्यानी, छेडू रो लाळ नाखी, छीरो चढ़ चढ़ करै हो, दो टोपां में किसी मुनाफा कर ही केस खोस्या किसी मुने हळको हुब हो, प्रब सगळो बेचणो पडसी, कुण दे'सी पूरा पइसा मने पण चाप धिबटी ही को रहोनी, बी बिना तो दिनुण लोटो उठावण री सरघा ही को हुवंगी । सु पण भाळी तमाखू ही कठे, फेर उठ'र चाडिया देख्यो गुड रो दो किरची पडी है, भान डोडान भर निठ हुबलो, मिरचा रा फोलरा साळ-जादा नहीं तो पाव खड तो-एक कीलो खांड तो लागी ही पडमी-तेल तो प्रवार धिक जई दिन इयां ही राबडी कड्डी सू काम निकळै । पण इयां कित्त दिन धिकसी एक दो दिन धिकया ही किसी पार पडी, हीरियो तो प्रवार भायो र'सी दो घडी नै ।" बण एक पूर नै ईडूणी सी कर'र तपेली सिर पर ऊचली भू पडो ब'द कर र टुरगी । मास्टर रामजस मिलग्यो टकी र प्रागल पास । पूछयो, "काई ऊचलियो तपेली मे, माजा ?"

'चोपड है माठरजी ।'

वेचण जावो ?"

'हा ।'

दिखावो", डोकरी अघर स तपेली उतारी, पळो लोत्यो मास्टर घी देख्यो, घी अघेर में हीं छानो को रबनी, सुग'घ ही कह दियो, तो ही वण थो' सी भागळो डुबो'र नाक म दियो । बोस्यो "मने सेणो है माजी, भाव फेर" ।

"माठरजी, मन काई ठा ये रात दिन लेवो जिका जाणो ।"

"तेईस रिपिया देस्यु माजी फीलै पर, पण रिपिया दस तो ये प्रवार लेवो, नगद, बाकी तीन दिन ठेरणो पडसी, तिणखा भाई भर दियानी ।"

माठरजी भाव री तो कौं नी, पइसा तो मने हायोहाय ही देणा पड ।

"तो जावो माजी," भर वा फेर टुर पडी, घनजी रीं दूकान कानी ।

होळ होळ खालती, बा सेठ र बरामदे में जा'र बँठगी । पांच रात पिट बाद घनजी आप ही आयो बरामदे कानी । डोकरी नै नेख'र बोत्यो 'बोलो माजी, कियै पघारणो हुयो ?"

चोपड है, कीलो शोडक ।"

"तावो है ?"

‘एकदम महीन चीम दिना रो, घर री गाय रो ।’

‘मटभेळ तो को है नी ?’

‘भोजू तो तार किया ब ही को नीवडघानी सेठां, धबे कित्तीक रात कितोक मांभरको, नुवे सिर सू भळी पोळाळ, चेतो गाव गयोडो है ।’

‘नहीं है सेळभेळ तो आछी बात है सुख पास्यो ताबा दिखावो देखा ?’

बोकरे छेडो कियो गळनो, सेठ दा घांगळी आछी सी भर'र झट बाकें में घातली, की हाथ र ऊपरल पासं लगा'र घोडो मसळ'र सु घो ।

‘ठीक ही दोस धी तो, दाम बोली ?’

‘दीस री मा रो काई लेणो दणो है सेठा, चूरमो कर'र जीमलो, काळवो घुडे तो दुगमो में हुब बा म्हार में किया, दाम है काई बताळ रात दिन लेवो देवा ये ।’

‘घट्टार रिपिया है ।’

‘कीं तो सावळ फुरमावो घरे भाय रो ही दोस है काई ? सहर में तो तेईस चौईस रा भाय बताव ।’

‘तो माजी सहर ही लेजावो, भठ रा पोडा ही कयो देख्या ?’

‘हू हीं तो सहर जावती तो भठ कीहणा मारती क्यों भावती, घारो गन ही काईठा किया नही ली है, म्हारो ही जो जाणें ।’

‘सहर में माजी केई चुपी, केई टेकस, भावण जावण रा भाडा तोडा, ता गण्डा है, म्हार तो ई में रिपियो घाठाना मजूरी हुवे तो हुब, नहीं तो सुवा पूरा ही सही, यघो है, की गाहको लार ही खानणो पड ।’

‘देखलो, दाम तो कम है सेठा ।’

‘सैर देव नस्यो, निरपारी ?’

‘हां सा ?’

‘स भी ठांव लेजा माजी रो, माली कर'र झला भगला नै ।’

घोडी ताळन बण घा र कयो, ‘शेड कीलो दस घाम है ।’

‘दो साल हुया तोलो जोखो करत न गने, दस घाम रो कोई हिखाव हुवे पी म, काई पीपळाभोळ है भा ? बीस तोस घाम तो ई मे ध्याव ही हुवेतो प्यान राठगा चाईर, बीवार बीवार र तरीक सु करणो ।’

डोकरी, घर सिनाथ रें काध पर हाथ दियां सूरदास, भूछा तिस्रा घर उदास बस रें अट्ट कानी बगै हा । काळजें असतोप घर होठा पर लटाई अ अट्ट पर भा र रेंठग्या । बस हकण में ओजू एक घटा बाकी हो ।

डोकरी बेलियो खोल'र एक यातण में बघ्योडा दो पीडिया काडपा, तीना दो गुटका पाणी भाव जिसो आधार कर लियो । सामन पी हो, एक बुटी वाज डोकरो पाणी पाव हो । नीचल होठ नीच खासो सारो जरदो दे राख्यो हो । कोई दो पाव पइसा देव बीन ठडो पाणी कोरी मटकी सू पावें घर पाव ही डग सू नहीं जिबा न एक मोटा बाळटी भरो भी मा सू, पाणी ही की गिदळपोको गरम धर वेस्वादो । सूरदास बूक मांडी, डाकरें भरठ दे सो लोटो ऊवा दियो एक गुटको लेईज्यो हुसी, बाकी पाणी बूक ऊपर कर नीच सगळा पूर भीजग्या । मूरदास र कठें खटाव, 'हू तो आंधो हू, म्हार दाई हीं तू है काई ?'

क्या बोलियो भूठ सू पोणी पोणो है तो पी, नहीं तो ओ पडियो रस्तो नाप डठें सू, रग जमाव है क्या म्होर माय ?'

सिनाथ बोल्यो "ओ तो ठीक ही बोल्यो है तू अठ पाणी पांवण बठो है का नसो उगावण न ? ओरो ल घर स्याळा पढ दिन भर में आंधो बाळटी तो लाळा पाव लोगा नें, घर करडावण में पाठी ही को देनी ।'

'म्है इय में क्या कियो इतो गरम हूण री क्या जखत है ?'

स तो पूर भिजो दिया, नास्या में पाणी चढग्यो, अळसूट सू आख्या अगल री वारें भाव घर कठ ओजू सूका ही पडया है और तू काई हांग मारु हो ?'

डोकरी सडी ही कर्ने हीं, बोली, "तू अठें तंकीसदार लाग्योडो है का पाणी पांवण न ? सर सर करतो पाणो हीं, है तो इसो ई खेळी में डुबो डुबो'र काडू दो तीन दफ भेड न काड ज्यु हणै पारी भाग जावें कठें ही दाटो बहयिय री सो, गळती न तो को देखनी, घोरबा और करे ।"

करा ही कयो, जावण दो जावण दो माजी म्हाराज भोळो है प्राण सारु ध्यान राख्या करो ब्यासजी ।"

'भोळो है तो खेळी में तो का पियनी, पाच पइसा कोई देव तो 'हां बाबूसा, अबार लायो ठडो टोप जळ, फट लोटो हाथ मे देवतो ही हुब, अवार लोरी में बठी एक सेठाणी न करवो ले'र पा'र आंधो है म्हाराज रो मू खों जियो भागीनें सू, म्हाराजा रो भोळ हुतो तो देस न नेवण देवता को आवता नी ?'

ई घोड़ी गरमागरमी से फल भी हयो क डोकरो घर सिनाय न पाणी ठहो ही नहीं, हाथ में लोठो पीर दे दियो—पाणी स्तोरो पीवण न। सामनें से एक भीत पर सिनाय एक घोड़ी बाँच हो, 'भनुधासन ही देग को महान बनाठाई', फेर भाग 'यहा कोई पेशाब न करे' पण लोगां मूत-मूत बीं भीत से सत्यानास कर राख्यो हो घर बीर स्वार स्वार बेमुबार टट्टी प्यारी। भीत मू पाँच सात पाँचवाँ परियाँ पसावघर हो, किवाडियो कोई सेयग्यो दोस हो, परियाँ सू हीं बींरो डुरगघ भाव ही-भायो ऊचो चढ जिती। सिनाय सोचें हो, "इयाँ भीताँ, पाखाना पर पसावघर पर लिख्या भनुधासन रैया कर—लोगां भनुधासन रैं प्रासरो लाई घर दे राखी है। फेर बीन घ्यान भायो हजारीमल से दूकान में टप्पोडा नोहार धनबी र बरामद में लिट्योडा दोहा, चौगाई, पर च्यार सुन सपडा जीवन मू कौसां दूर दिक्काऊ पर ऋड भीताँ से फुठरायो-कूटो प्रचार; ई पर सरकार पर समाज बीवता हूसी? इयाँ जे सरकार त्रिये तो बीन मरण हा कुग द, पण तो ही दौड बीन हीं है।" विचारो में सोयोडो, वो घोडा भीर भाग निकल्यो।

वण देख्यो, गाडभाळो एक जवान छीरो, गांव र कोई वूठें गाहक साथ बोल हो। गाहक कयो, "भा भाठानी छोटी है काबू साँव, दोना कानी एकसी, प्रांक ही को दीसनी, प्रवार घोडी सी ताळ पैतां हू मृजिया से'र गयो प्राप मू, बन्लणे बाबू।"

गाडभाळो बोल्यो, 'बाबा कान में घालल ईने, सेइ को उठनी कान में।'

'घरे बीरा पी ताई हीं तो जा'र प्रायो हू, समाळो जे'र जेसन, म्हारें कन दूजी फोई हव तो प्राठानी।'

"कह दियो मायो भत खा," हाथ मूँ सेवतो सो घबको दे'र डोकरें नी वण भागो कर दियो "बाले भागीनें, बिगाण कठे ही नावें पदीरसी।"

डोकरो बोल्यो "बाबू, इन्याव है ओ तो, भोजू तो मृजिया म्हारें हाथ में ही पढ्या है।"

"वताऊ काई बायो घणों हीं सगहवार?"

गाड र एक फाटक पर लिब्योडो हो, 'मुक्क वीरिस जि'दावा' 'मुवा नेत्रा ई हृदय सभ्राट', इयाँ हीं केई नारा पर केई नाव भीर। गाडभाळ री छीमरी सेवता पर जरूर कोई गळतपमी तिरें हो घर चरे पर एक कूटो घई। भाव रास सब बीर गाडभाळो सू भो घरणे आपनें कीं 'यारो सो सपन्तो लाग्यो सिनाय ने गरीब डोकरो मळे ई कन को प्रायो नो। डुरग्यो, एकर से दकै ई कानी मुक मुक

मादम्यां री घोडी है, भगवान री नहीं भावा ई न हीं तो कीं बदलनी चावा ।'

"समझ्या बाबा, जय हुवो घारी ।"

"तो धरें जावो ये, खेत जावण नै मोडो हुव घार ।"

सगळा ही टुरग्या, निवळता चर्चा करे हा, 'भस प्रापणी, चारो व
घाटो घापणो भळे भूसा घयो, सूरदास री बात फिटोफिट है ।"

□

□

स्पताल में भरत माध, कुळवे डोल घर प्रघचेत धे जियां
पुग्या, एक डागघर धीरजी नै मुछपो, "भां दो! नसब दी करा राखी है
नहीं, भा बतावो पता ?"

धीरजी कयो, "नहीं सा ।"

'तो पतां भा लिख'र देवो कै, म्हे नसब दी करणो चांवां, इलाज री
बात पछ करघा ।

"कीरो ही मोड भर तो भरो, सास निकळें तो निकळो, पैलां पारं
घत पुरी हुणी चाईजे मजदूरी में तो इयां कीं हैकरा सको डागघरसा'व, गां
न बाप बणा'र ऊचास्यो तो ही ऊचस्या पण ये घारी लीक मत छोडपा-
कैस्यो बीन हीं बेस्या पावडा म्हे तो ।'

'काई बताळ ठाकरसा देस में घबार हुवा ही इसी है, घार सू
किसी छानी है ।'

"बीन सू खल है घा हवा कीं तो मन हीं समझावो ?"

'ठेठ चोटी सू ।'

'चालणने सा टम है पण बारू भाम हवा रो रुख एक सो को रयां
करे है नी कदेई दिस फुरणी जद ?'

डागघर बडो भलो, सुषो घर बवारकुसळ लाग्यो, हीळ स बोत्वो,
'जरूरी है फुरसी बा तो घर राम कियो तो चोटी रा रुवटा ही उडती पण म्हे
तो ठाकरा सासु प्रागली बहू हां घोडायो काम करां, घोडो दियां घठ ठरा कित्ता
घडी राज है बीरो भाज है ।'

' । प्रनजी बोल्यो, 'अवार तो, यारी दो महीना रा दांया है जित तो प्राभो यांन टोपसी सो लाग, पण दिल्ली ओजू दूर है चौभासो भळयो है भजो । तेहो भेज'र बुलाया, तो ही सिर हिलावो, इसा प्ने काई प्रधानमंत्री रा वेठा हो ? काल ताई झाछ राबड़ी, पा पा'र टाबरा, दाई पाळघा भाज अबाब देवं, सेठ काई पूछ बाढसी म्हारो, कमाई म्हारी कर'र खावां, पूछ तो रामजी ही को राख्योनी, हँ काई बाडू ?'

रामधन बोल्यो, "अवार जमाना हीं भलाई रो को रयोनी सेठा ।"

नल्यू बोल्यो, "ये सेठा, चौभासो भळ्य री करमाई, पण लेठा तो प्रिस्त मे-भीर घणा हीं है नी-छोर छोरो रा केरा किनारै घायोडा हण डोकरी, माएरो मसाओ मरा पाणो, तातो मांगी भर घास रो कुंग मारो । ये लिछमी रा पुत्र हो थां बिना बस्ती मे पार पडे कदेई ?"

रामधन बोल्यो, "चौधरी, पाप रो बाप, छेना री रकम तो ओजू यकी ही पडी है ?"

वार्ता सू तो सुरतिय रो मन घा इसो घायल कर दियो क घो भागे सारु भाक्ष में घाल्यो ही नही रहक । वो हाथ जाड'र बोल्यो, "माईता है लम्बी चौडी को जाणु ना, हँ तो म्हार जी री सखो भरू, हू तो भाज ताई न तो यारै सू बढळघो भर न भागै बढळू म्हारा घाटा तो याने रिया ही काढयो पडसी ।"

सेठ पूछघो, "बाव काई है, बा तो सुणा ?"

बुगचडी खोल'र बोल्यो, "मैं तो दूम है म्हार कने पांटी रो हयाराना तीनपाव भर बोरी दो-तीन है मोठ ।"

"भर रिपिया ?"

"रिपिया हजार घाठस में तो पाणी हो को पडनी !"

"केर तो मुस्कल है पाड पडनी भास कचरो कठ गयो ?"

"पडघो है पाच-सात गाडी ।"

बीरो काई करछी यारु कितो धोणो है ?"

'नाख लेया महीन पर ।"

रामधन बोल्यो 'सेठां पुरखो अवार घा'र गयो ही हो, परधु जान चडसी छोर री, घर घो बापघो भायो ही है, छोरे सुखे सँ घा दुवसी, गांव में बससी बीन तो की न की रस्ते ई देवळी नै तो धोकणो पडसी ।"

नत्यु बोल्यो, "सेठा, ई छोरै पर तो, मर करो की, म्हार कँण सू हीं श्रीरां दाई पाचा को पढैनी मो ।"

दूम सेठ माय मेलदी, इत्तें में केसरो कोटवाळ भा पूग्यो बोल्यो, "दो द्रुक धाया है पालो भरण नै ।"

नत्यु बोल्यो, "थे तो न्याल हुग्या सेठा, पालो करडो ऊधो कयो बीस वार्हिस ५ भाव है सहर में, हजारीमलजी ही पइसा खोखा कूट लिया धस ।"

'कीं दाळ रोटी आळा पइसडा हुसी ही श्रैसतो, आवतें रो भावतें दोससी, धैम जिंसा भासार कध ही लाण, सुरतिया चाल देखां भायें भाड कीं स्वारो तो लगत । चालो," मर स ही दुर बहीर हुया ।

सेठ सोचै हो, "गाव रा दो-ब्यार सनकी बासण जखार खडा करण में लाग्योडा है, पण बान भा ठा क्याने है कीं नीचलो एक ही बासण मिरका दियो कण हीं तो सै भाडा छिडे जा पइसी, लींकी रा लाख मारण हैं, श्रे किसो किसो समझसी ।"

सूरज छिपग्यो, बत्ती हुगी । द्रुक भरीज्या जित्ते सुरतियो पालें री चौसगी चला बोकरयो । मू जर मायो खंख सू भरीजग्या, भीळखणी में ही पो भावें हो नी । हाथ धर पणों में कांटा खुभग्या हा । द्रुक भरीजे पछ बोल्यो—

"भव जाळ सेठा ?"

'हां जा, काल मोठा री बोरी तीन लंबतो भाए, घास न हूँ गाढपां भेजू हूँ ।"

"भेज देया ।"

"तो जा" मर सेठ बत्ती रै चानणें लोट गिणन में लाग्यो ।

